संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 8
अंक : 62
फरवरी 1998
रु. 6/-

ऋषि प्रसाद

हिन्दी
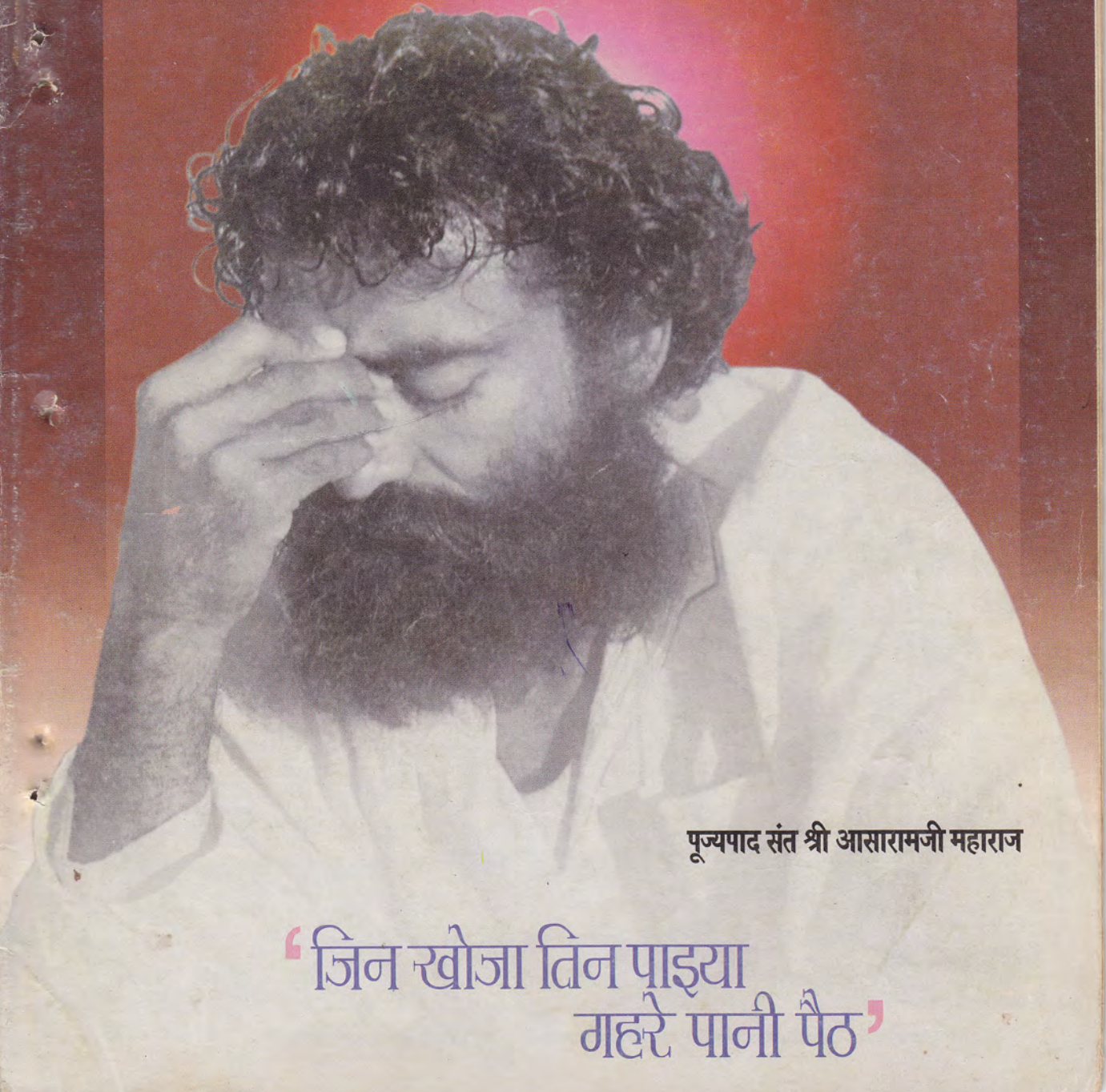
पूज्यपाद संत श्री आसारामजी महाराज

'जिन खोजा तिन पाइया
गहरे पानी पैठ'

वर्ष : ८
अंक : ६२
९ फरवरी १९९८

सम्पादक : क. रा. पटेल
प्रे. खो. मकवाणा

मूल्य : रू. ६-००

सदस्यता शुल्क
भारत, नेपाल व भूटान में
(१) वार्षिक : रू. ५०/-
(२) आजीवन : रू. ५००/-

विदेशों में
(१) वार्षिक : US $ 30
(२) आजीवन : US $ 300

कार्यालय
'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अमदावाद-३८० ००५.
फोन : (०७९) ७५०५०१०, ७५०५०११.

प्रकाशक और मुद्रक : क. रा. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, साबरमती, अमदावाद-३८० ००५ ने पारिजात प्रिन्टरी एवं भार्गवी प्रिन्टर्स, राणीप, अमदावाद में तथा पूर्वी प्रिन्टर्स, राजकोट में छपाकर प्रकाशित किया।

प्रस्तुत है...

पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग
ATN चैनल पर रोज सुबह ७-३० से ८.

अब आश्रम विषयक जानकारी Internet पर उपलब्ध है : www.ashram.org

'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्रव्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक एवं स्थायी सदस्य क्रमांक अवश्य बतायें।

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

राग-द्वेषरहित समतावान पुरुष का वर्णन करते हुए भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ।।

'जो पुरुष सब भूतों में द्वेषभाव से रहित, स्वार्थरहित, सबका प्रेमी और हेतुरहित दयालु है तथा ममता से रहित, अहंकार से रहित, सुख-दुःखों की प्राप्ति में सम और क्षमावान है अर्थात् अपराध करनेवालों को भी अभय देनेवाला है (ऐसा मेरा भक्त मुझको प्रिय है) ।'

(भगवद्गीता : १२.१३)

अद्वेष्टा सर्वभूतानां... प्राणीमात्र के प्रति चित्त में द्वेषभाव न हो । जहाँ राग-द्वेष नहीं हो वहीं भक्ति होती है । यदि चित्त में राग-द्वेष होगा तो भगवान का भजन करना चाहोगे तब भी नहीं होगा । भगवान का भजन करने तो बैठोगे लेकिन धन में, पुत्र-परिवार में, शरीर में राग होगा तो उसका चिन्तम होगा और पड़ोसी से, शत्रु से या बॉस से द्वेष होगा तो उसका चिन्तन होगा । इससे मन भजन में नहीं रहेगा वरन् जहाँ उसका राग-द्वेष होगा वहीं जाएगा ।

सामान्य व्यवहार भी द्वेषभावरहित होकर करना चाहिए । यदि तुम किसीकी गलती सुधारना चाहते हो तो उसके साथ द्वेष रखकर, उस पर क्रोध करके या ईर्ष्याभरे बर्ताव से उसे टोककर सुधारना चाहोगे तो वह नहीं सुधरेगा । लेकिन द्वेषभाव से रहित होकर, चित्त को सम रखकर प्रेम से व्यवहार करोगे तो वह जरूर सुधर जाएगा । यदि तुम्हारे चित्त में द्वेषभाव न होगा तो फिर विषधर सर्प भी आज्ञा का पालन करने को तत्पर हो उठेगा ।

भगवान शंकर के गले में और हाथ में सर्प है और गणपति का वाहन चूहा है । साँप और चूहे का वैर होता है परन्तु भगवान शिव के सान्निध्य में दोनों के चित्त में शान्ति है क्योंकि भगवान शिव **अद्वेष्टा सर्वभूतानां** के भाव में स्थित हैं । उनका प्रभाव वातावरण में पड़ने से प्राणी भी अपना वैरी स्वभाव भूल जाते हैं ।

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च...

हमेशा सज्जन पुरुषों के साथ मैत्री करनी चाहिए और जो हमसे ज्ञान में, धन में, सत्ता में छोटे हों उनके प्रति करुणा रखनी चाहिए और उन्हें ऊपर उठाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए । किसीको आगे बढ़ता देखकर उसकी टाँगें खींचकर गिराने की वृत्ति कदापि नहीं रखनी चाहिए बल्कि उसके साथ मित्रता करके आगे बढ़ने का प्रयत्न करना चाहिए ।

साँप और चूहे का वैर होता है परन्तु भगवान शिव के सान्निध्य में दोनों के चित्त में शान्ति है क्योंकि भगवान शिव अद्वेष्टा सर्वभूतानां के भाव में स्थित हैं । उनका प्रभाव वातावरण में पड़ने से प्राणी भी अपना वैरी स्वभाव भूल जाते हैं ।

निर्ममो निरहंकारः... शरीर को 'मैं' मानना और शरीर के सम्बन्धों को 'मेरे' मानना- यह अहंता और ममता है ।

भोलेबाबा ने कहा है :

नश्वर अशुचि यह देह तीनों ताप से संयुक्त है ।
आसक्त हड्डी मांस पर, होना तुझे नहीं युक्त है ।।
पावन परम निज आत्म में, मन वृत्ति अपनी जोड़ दे ।
सन्तोष समता कर ग्रहण, ममता अहंता छोड़ दे ।।

'नाशवान, अपवित्र ऐसी यह देह तीनों ताप से संयुक्त है । ऐसे हाड़-मांस की इस देह पर आसक्त होना तुझे नहीं शोभता । परम पवित्र अपने आत्मा में मन की वृत्ति को जोड़कर संतोष, समतापूर्वक रह और अहंता-ममता छोड़ दे ।'

शरीर एवं शरीर सम्बन्धी उपलब्धियों में 'मैं'पना करके अहंकार नहीं करना चाहिए तथा शरीर में ममता नहीं करनी चाहिए क्योंकि 'मैं' और 'मेरा' - इन दो भ्रांतियों के कारण ही जीवन भवबंधन में फँसता है। 'मैं' और 'मेरा' इन वृत्तियों की वजह से ही जीव एक-एक जन्म के नहीं, बल्कि अनेक जन्मों के, चौरासी लाख योनियों के चक्कर में उलझाता रहता है। इस चक्कर में से छूटने के लिए ही भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि **निर्ममो निरहंकारः** बनो।

सुख और दुःख के प्रसंग तो आते हैं और जाते हैं लेकिन यदि उनमें प्रीति कम होती है तो उनका प्रभाव कम पड़ता है।

समदुःखसुखःक्षमी... जीवन में सुख और दुःख के प्रसंग तो आते हैं और जाते हैं लेकिन यदि उनमें प्रीति कम होती है तो उनका प्रभाव कम पड़ता है। सुख भी हमेशा नहीं टिकता और दुःख भी हमेशा नहीं टिकता। सुख और दुःख आने-जानेवाले हैं, उन्हें गुजरने देना चाहिए। सुख में सुखी और दुःख में दुःखी नहीं होना चाहिए।

श्रीकृष्ण ने कहा है :

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदा।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत॥

'हे कुन्तीपुत्र ! सर्दी-गर्मी और सुख-दुःख को देनेवाले इन्द्रिय और विषयों के संयोग तो उत्पत्ति-विनाशशील और अनित्य हैं, इसलिए हे भारत ! उनको तू सहन कर।' **(भगवद्गीता : २.१४)**

सुख और दुःख तो आते-जाते हैं, लाभ-हानि, मान-अपमान, हर्ष-शोक ये सब आते-जाते रहते हैं लेकिन इन सबको जो जानता है, इन सबको जो देखता है वह (परमात्मा) तो कहीं आता-जाता नहीं है। वह सदैव एकरस है। वही जाननेवाला साक्षी आत्मा सदैव तुम्हारे साथ है और वह साक्षी आत्मा तुम स्वयं ही हो। अपनेको साक्षी आत्मा मानकर-जानकर तुम सुख-दुःख से पार हो जाओ। 'सुख भी मेरा नहीं है या न ही मुझे सुख होता है, दुःख भी मेरा नहीं है या न ही मुझे दुःख होता है।' इन विचारों में दृढ़ रहकर अपनेको आनन्दस्वरूप आत्मा मानो तो अपने आत्मा का ज्ञान पाकर मुक्त हो सकते हो, फिर कृष्ण में और तुम्हारे में, राम में और तुम्हारे में कोई फर्क नहीं रहेगा।

दृढ़ता से फालतू विचारों को हटाकर आत्मचिन्तन करो, अपने आत्मिक आनन्द को, ईश्वरीय प्रेम को छलकने दो।

तुम अपने आत्मस्वरूप में स्थिर होकर मन-बुद्धि के विचारों को भी आत्मरस में सराबोर करो तो जीवन जीने का भी मजा आएगा और मरने का भी मजा आएगा। छोटी-छोटी बातों में ग्रंथियाँ बाँधकर राग-द्वेष में जीवन खत्म न कर डालो। आत्मशक्ति का अनादर न करो लेकिन दृढ़ता से फालतू विचारों को हटाकर आत्मचिन्तन करो, अपने आत्मिक आनन्द को, ईश्वरीय प्रेम को छलकने दो।

श्रीमद् आद्य शंकराचार्य ने कहा है :

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥

'राग-द्वेष मुझमें नहीं हैं, लोभ-मोह मुझमें नहीं हैं, मद-मात्सर्य भी नहीं हैं, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष भी मुझमें नहीं हैं। मैं चिदानन्दरूप, शिवस्वरूपआत्मा हूँ।'

अपने आत्मस्वरूप में स्थिर होकर मन-बुद्धि के विचारों को भी आत्मरस में सराबोर करो तो जीवन जीने का भी मजा आएगा और मरने का भी मजा आएगा।

इस बात को अगर तत्त्व से समझ लो तो तुम भी ब्रह्मवेत्ता हो जाओगे।

*

क्रियाशक्ति और ज्ञानदृष्टि का समन्वय

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

अगर आप अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करना चाहते हैं, उत्तम रीति से कार्य करके सफलता पाना चाहते हैं तो आपको क्रियाशक्ति और ज्ञानदृष्टि का सम्यक् उपयोग करना चाहिए। जीवन में क्रियाशक्ति हो परन्तु ज्ञानदृष्टि न हो या ज्ञानदृष्टि तो हो परन्तु क्रियाशक्ति न हो तो जीवन एकांगी बन जाता है। ऐसी स्थिति में आदमी किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक पूरा नहीं कर पाता है। क्रियाशक्ति के साथ ज्ञानदृष्टि मिल जाती है तब कार्य चमक उठता है। समझ बिना की क्रिया, ज्ञान बिना की क्रिया मजदूरी बन जाती है और आचरण में न लाया जाए ऐसा ज्ञान बोझा बन जाता है। ज्ञान को क्रिया में लाने से जीवन सुखमय बनता है।

दुःख के प्रसंग में चित्त को कैसे शांत रखना, घर में कुछ झगड़ा हुआ हो या कोई समस्या आ गयी हो तो उसे कैसे हल करना, कोई बीमार है तो वह अपने तन-मन का स्वास्थ्य पुनः शीघ्रता से प्राप्त करे ऐसा व्यवहार कैसे करना, विपरीत संजोगों में चित्त को सम कैसे रखना, किसी दुःखी आदमी को सहायरूप कैसे बनना, परमार्थ के पथ पर खुद भी चलना एवं औरों को कैसे ले चलना, भक्ति में सफलता कैसे पाना आदि-आदि प्रकार की ज्ञानदृष्टि आपके पास होगी और आप अपनी ज्ञानदृष्टि का सम्यक् उपयोग करोगे तो आपका जीवन धन्य हो जाएगा। आपके सर्व कार्य सफल हो जाएँगे और अगर नहीं भी हुए तो भी आप हताश-निराश होकर रुक नहीं जाओगे वरन् आगे बढ़ते रहोगे।

कबीरजी, नानकजी, श्रीरामकृष्ण परमहंस, पू. लीलाशाहजी बापू जैसे महापुरुष तुम्हारे भीतर बसी हुई अशोकवाटिका में, जहाँ सीताजीरूपी ब्रह्मविद्या रहती है वहाँ चलने के लिए कहते हैं। उनके वचनों पर श्रद्धा रखकर चलोगे तो ब्रह्मविद्यारूपी सीताजी को पाने में अवश्य सफल हो सकोगे।

श्रीरामचन्द्रजी के सेवकों ने भी क्रियाशक्ति और ज्ञानदृष्टि का समन्वय करके ही तो सीताजी का पता लगाया था। चौदह वर्ष के वनवास के दौरान जब रावण सीताजी को उठा ले गया था तब श्रीरामजी ने वानरराज सुग्रीव को सीताजी की खोज करने का कार्य सौंपा था। सुग्रीव ने एक मास की अवधि देकर वानरों के समूह को और उनके प्रधान योद्धा नील, अंगद, हनुमान, जाम्बवान आदि को सीताजी का पता लगाने के लिए भेजा।

चले सकल वन खोजत, सरिता सर गिरि खोह।
राम काज लवलीन मन, बिसरा तन कर छोह ॥

'सब वानर वन, नदी, तालाब, पर्वत और पर्वत की कंदराओं में खोजते हुए चले जा रहे हैं। मन श्रीरामजी के कार्य में लवलीन है। अपने शरीर तक का प्रेम (ममत्व) भूल गए हैं।' **(किष्किन्धा काण्ड : २३)**

सीताजी की खोज में निकले हुए वानरों के समूह को अत्यन्त प्यास लगी। कहीं भी जल नजर नहीं आ रहा था। प्यास के मारे मानो उनके प्राण निकल रहे थे। तब हनुमानजी ने पहाड़ की चोटी पर चढ़कर देखा कि दूर एक गुफा के ऊपर बगुले, हंस आदि पक्षी उड़ रहे हैं और बहुत से पक्षी उसमें प्रवेश भी कर रहे हैं। सभी वानर वहाँ पहुँच गए। गुफा में तालाब था और वहीं एक सुन्दर मन्दिर भी था जिसमें एक तपस्विनी स्त्री बैठी थी। सबने उसे सिर नवाकर अपना वृत्तांत सुनाया। तब उसने उनको जलपान करने तथा मधुर फल खाने के लिए कहा। सबके स्नान एवं जलपान करने के बाद उसने

सबसे कहा :

मूँदहु नयन बिबर तजि जाहू। पैहहु सीतहि जनि पछिताहू।
नयन मूंदि पुनि देखहिं बीरा। ठाढ़े सकल सिंधु कें तीरा॥

'तुम लोग आँखें मूँद लो और गुफा को छोड़कर बाहर जाओ । तुम सीताजी को पा जाओगे, पछताओ नहीं (निराश न होओ) । आँखें मूँदकर जब फिर से आँखें खोलीं तो सब वीर देखते हैं तो सब समुद्र के तीर पर खड़े हैं।'

(किष्किन्धा काण्डः २४.३)

ब्रह्मविद्यारूपी सीताजी को ढूँढ़ना है तो बाहर की आँखों से नहीं ढूँढ सकते। ब्रह्मविद्या पानी हो, आत्मज्ञान पाना हो तो बाहर की आँख बन्द करके भीतर की आँख खोलनी होगी।

यहाँ आध्यात्मिक रूप से हम सीता माता का पर्याय 'ब्रह्मविद्या' से ले सकते हैं। सीताजी को यानि ब्रह्मविद्या को आँखें खुली रखकर ढूँढ सकते हैं कि बन्द रखकर ? यहाँ आँख मूँदकर कहने का मतलब है कि यदि ब्रह्मविद्यारूपी सीताजी को ढूँढ़ना है तो बाहर की आँखों से नहीं ढूँढ सकते। ब्रह्मविद्या पानी हो, आत्मज्ञान पाना हो तो बाहर की आँख बन्द करके भीतर की आँख खोलनी होगी। 'मैं कौन हूँ ? यह जगत क्या है ? ईश्वर का स्वरूप कैसा है ? मन क्या है ? बुद्धि क्या है ? आत्मा का स्वरूप क्या है ?' इसके विषय में सोचनेवाली भीतर की विवेकदृष्टि होगी तो ब्रह्मविद्यारूपी सीता माता की प्राप्ति भी हो जाएगी।

''हम दोनों भाई सूर्य के निकट चले गए। जटायु तेज सह नहीं सका इसलिए वह लौट आया और मैं अपने अहंकार के वश आगे ही आगे उड़ता रहा लेकिन अत्यन्त तेज के कारण मेरे पंख जल गए। मैं चीख मारकर जमीन पर जा गिरा।''

वह तपोमूर्ति स्त्री योगिनी स्वयंप्रभा थी। उसने सोचा कि इन लोगों के पास इतना समय नहीं है कि वे लोग चलकर समुद्रतट पर पहुँचें और फिर सीताजी को खोजने उस पार जाएँ। इससे पहले तो उनको दी गई अवधि पूरी हो जाएगी। इसलिए स्वयंप्रभा ने सबसे आँखें बन्द करने के लिए कहा, फिर अपने योगबल से सबको समुद्रतट पर पहुँचा दिया।

योग में इतना सामर्थ्य होता है। उस सामर्थ्य का जिस तरह से उपयोग करना चाहें कर सकते हैं और यह शक्ति बीजरूप में सबके पास है। जैसा सामर्थ्य स्वयंप्रभा के पास था, वशिष्ठ मुनि के पास था, शुकदेवजी महाराज के पास था, भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण के पास था, वही का वही आपके पास भी है। उनके पास जो शक्ति बीजरूप में पड़ी थी उसका उन्होंने वटवृक्ष की तरह विकास कर लिया और तुम्हारे पास अभी बीजरूप में ही पड़ी है। तभी तो स्वयंप्रभा के योग-सामर्थ्य के आगे शरीरबल और बुद्धिबल के धनी बालीपुत्र युवराज अंगद, जाम्बवान, हनुमान आदि योद्धा भी बालक समान हैं।

वानरगण के साथ सभी योद्धा समुद्रतट पर तो पहुँच गए लेकिन सीताजी की सुधि नहीं मिल पा रही थी। इससे वे बड़े उदास थे। उनके नेत्रों से आँसू बह रहे थे। वे कुछ बोल नहीं पाते थे। निराश होकर लवणसागर के तट पर कुश बिछाकर सब वानर बैठ गए। तब जाम्बवान ने सबको अनेक प्रकार से उपदेश-कथाएँ कही और सांत्वना दिलायी कि श्रीरामजी को मनुष्य न मानो। उन्हें निर्गुण ब्रह्म, अजेय और अजन्मा समझो। हम सब सेवक अति बड़भागी हैं जो निरन्तर सगुण ब्रह्म श्रीरामजी में प्रीति रखते हैं।

हम सब सेवक अति बड़भागी। संतत सगुण ब्रह्म अनुरागी॥
निज इच्छाँ प्रभु अवतरई, सुर महि गो द्विज लागि।
सगुन उपासक संग सहँ, रहहि मोच्छ सब त्यागि॥

'देवता, पृथ्वी, गौ और ब्राह्मणों के लिए प्रभु किसी कर्मबन्धन से नहीं किन्तु अपनी इच्छा से अवतार लेते हैं। यहाँ सगुणोपासक भक्तगण सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य सब प्रकार के मोक्षों को त्यागकर उनकी सेवा में साथ रहते हैं।' **(किष्किन्धा काण्ड : २६)**

इस प्रकार जाम्बवान बहुत-सी कथाएँ कह रहे थे। उनकी बातें पर्वत की कन्दरा में बैठे संपाति ने सुनी। बाहर निकलकर उसने बहुत-से वानर देखे। वह मन में सोचने लगा : 'मैं बहुत दिनों से भूखा हूँ। आज भगवान ने घर बैठे ही मेरे लिए प्रसाद भेज दिया है।'

संपाति को देखकर सब वानर उठ खड़े हुए। अंगद ने सोचा : 'हम प्रभु के कार्य के लिए निकले हैं। इसलिए भय और निराशा की बातें नहीं करनी चाहिए।' अतः वह बोला : ''जटायु के समान धन्य कोई नहीं है।''

जीवन में क्रियाशक्ति हो परन्तु ज्ञानदृष्टि न हो या ज्ञानदृष्टि तो हो परन्तु क्रियाशक्ति न हो तो जीवन एकांगी बन जाता है। आदमी किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक पूरा नहीं कर पाता है। क्रियाशक्ति के साथ ज्ञानदृष्टि मिल जाती है तब कार्य चमक उठता है।

रामकाज कारन तनु त्यागी। हरि पुर गयऊ परम बड़भागी॥

'श्रीरामजी के कार्य के लिए शरीर छोड़कर वह परम बड़भागी भगवान के परम धाम को चला गया।'

(किष्किन्धा काण्ड : २६.४)

जटायु का नाम सुनते ही संपाति ने वानरों से कहा : ''तुम डरो नहीं, घबराओ नहीं। मैं तुम्हें अपना आहार समझ रहा था लेकिन तुम्हारे मुख से जटायु का नाम सुना। जटायु मेरा भाई था। मैं तुमको अभय-दान देता हूँ।'' फिर उसने जटायु का वृत्तान्त पूछा कि उसने प्रभुकार्य में अपना जीवन कैसे अर्पण कर दिया ?

वानरों ने उसे सारी कथा कह सुनायी। संपाति ने श्रीरामचन्द्रजी की महिमा का वर्णन किया। उसने कहा :

''हम दोनों भाई अपनी जवानी में एक दिन आकाशगामी होकर सूर्य के निकट चले गए। जटायु तेज सह नहीं सका इसलिए वह लौट आया और मैं अपने अहंकार के वश आगे ही आगे उड़ता रहा लेकिन अत्यन्त तेज के कारण मेरे पंख जल गए। मैं चीख मारकर जमीन पर जा गिरा। वहाँ चन्द्रमा नाम के मुनि थे। उन्होंने मुझे बहुत प्रकार से ज्ञान सुनाकर मेरा देहसंबंधी अभिमान छुड़ाया और कहा : त्रेतायुग में मनुष्य शरीरधारी साक्षात् परब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी राक्षसों के राजा रावण द्वारा अपहरण की गयी अपनी पत्नी को खोजने के लिए दूत भेजेंगे। उनसे मिलने पर तू पवित्र हो जाएगा और तेरे पंख उग आएँगे। तू उन्हें सीताजी दिखा देना। मुनि के वचन सत्य हुए। अब मेरे वचन सुनकर तुम प्रभु का कार्य करो।

त्रिकूट पर्वत पर बसी हुई लंका में अशोक नाम का उपवन है। वहाँ सीताजी रहती हैं। इस समय वे सोच में मग्न बैठी हैं। मैं उन्हें देख रहा हूँ। तुम नहीं देख सकते क्योंकि गिद्ध की दृष्टि अपार होती है, बहुत दूर तक जाती है। मैं बूढ़ा हो गया हूँ, नहीं तो अवश्य सहायता करता। आपके पास क्रियाशक्ति है परन्तु ज्ञानदृष्टि नहीं है। मेरे पास ज्ञानदृष्टि है परन्तु क्रियाशक्ति नहीं है। आपकी क्रियाशक्ति और मेरी ज्ञानदृष्टि का समन्वय होगा तो सीताजी को अवश्य पा लोगे।''

पापिउ जा कर नाम सुमिरहीं। अति अपार भवसागर तरहिं॥
तासु दूत तुम्ह तजि कदराई। राम हृदय धरि करहुँ उपाई॥

'पापी भी जिनका नामस्मरण करके अत्यन्त अपार भवसागर से तर जाते हैं तुम उनके दूत हो। अतः कायरता छोड़कर श्रीरामजी को हृदय में धारण करके सीताजी को खोजने का उपाय करो।'

(किष्किन्धा काण्ड : २८.२)

''आपके पास क्रियाशक्ति है परन्तु ज्ञानदृष्टि नहीं है। मेरे पास ज्ञानदृष्टि है परन्तु क्रियाशक्ति नहीं है। आपकी क्रियाशक्ति और मेरी ज्ञानदृष्टि का समन्वय होगा तो सीताजी को अवश्य पा लोगे।''

जिसके पास क्रियाशक्ति तो हो किन्तु ज्ञानदृष्टि न हो तो उसे ज्ञानदृष्टिवालों के वचन पर

(शेष पृष्ठ ११ पर)

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

संसार में रचनात्मक (Constructive) और विनाशकारी (Distructive) दो तत्त्व हैं । विज्ञान में ऑक्सीजन नामक वायु जीवनवर्धक है । कार्बनडाई ऑक्साईड नामक वायु अपने साँस के लिए विघातक है। रचनात्मक और विनाशक तत्त्व देव और दानवों के नुमायंदे हैं। ये दोनों तत्त्व कश्मकश पैदा कर देते हैं।

अपनी पृथ्वी पर ग्रह, नक्षत्र, तारों के प्रभाव से जीवन-अनुकूल और जीवन-विरोधक गतिविधियाँ होती हैं । वैज्ञानिकों ने कौन-से समय कौन-सी गतिविधियाँ होंगी इसके बारे में ज्योतिष शास्त्र की सहायता से अंदाजा लगाया है । इस अंदाज के मुताबिक पृथ्वी पर विशेष समय पर, विशेष स्थानों पर, विशेष कर्म करने की परम्परा चली आ रही है। इन विशिष्ट कर्मों को करने का समय 'पर्व' कहलाता है। विशिष्ट कर्म का स्थान 'तीर्थ' माना जाता है।

बृहस्पति पिंड जीवनपोषक तत्त्वों का सबसे पहला केन्द्र है। शनि पिंड संहारक तत्त्वों का कोठा है। इसलिए वैदिक ग्रंथ में बृहस्पति जीवात्मा नाम से मशहूर है । विनाशकारी प्रतिकूल ग्रह शनि के नाम से मशहूर है । सूरज का दो दशम हिस्सा छोड़कर शेष हिस्सा जीवनपोषक है।

वैज्ञानिकों द्वारा सूरज पर अन्वेषण किया हुआ काले दाग का हिस्सा जीवन को क्षति पहुँचानेवाले तत्त्वों से खचाखच भरा है। चाँद अमावस्या के समय जैसे-जैसे काला होता जाता है वैसे-वैसे उससे संहारक प्रभाव का निर्माण होता है लेकिन वह पूनम के दिन पूरी स्थिति में जीवनवर्धक रहता है।

शुक्र ग्रह विनाशक नहीं है। वह अनुकूल तत्त्व का है । अग्नि और पवन इन संहारक तत्त्व से वह मदद करता है । इसलिए उसे विनाशक तत्त्वों का चहेता समझा जाता है।

बुध ग्रह अपना एक ही करिश्मा दिखाता है। जिस पक्ष में ज्यादातर ग्रह प्रभावशाली हैं उस पक्ष में वह शरीक हो जाता है। राहु और केतु हमेशा विनाशकारी तत्त्वों में माने जाते हैं।

आकाश के बारह हिस्से माने गए हैं। उन्हें 'राशि' की संज्ञा दी गयी है। नक्षत्रों को, आकृति के अनुसार उन्हें नाम दिए गए हैं। जैसे मेष, कर्क, वृश्चिक आदि। राशि कौन-से ग्रह से पीड़ित है और राशि का स्वामी

(मालिक) कौन है यह ज्योतिष शास्त्र से स्पष्ट होता है। सिंह राशि का मालिक सूर्य है। कर्क राशि का स्वामी चंद्र है। मकर और कुंभ राशियों का स्वामित्व शनि के पास है। मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी मंगल है। जब बृहस्पति विनाशी ग्रह के पक्ष में शामिल होकर जीवन सृष्टि का संहारक होता है तब जीवनपोषक तत्त्वों का इस्तेमाल किया जाता है।

पृथ्वी पर जिस स्थान पर जीवनपोषक तत्त्व का दिखाई देनेवाला असर ज्यादा होता है वह स्थान उसी वक्त अमृतकणों से युक्त होता है। इस असर के माहौल में इकट्ठा होने की सूचना को कुंभमेला कहा जाता है। शनि ग्रह के पक्ष में बृहस्पति विशेष तौर पर कुम्भ राशि में आता है तथा सूर्य, चंद्र, मंगल यह ग्रह मेष राशि में आते हैं। ऐसी ग्रहस्थिति के समय पर हरिद्वार, पंचपुरी स्थानों पर अमृतयुक्त माहौल का निर्माण होता है। भक्तजन इसी समय हरिद्वार में आकर समय व्यतीत करते हैं।

*

देवव्रत की भीष्म प्रतिज्ञा

[भीष्माष्टमी ४ फरवरी पर विशेष]

परित्यज्येयं त्रैलोक्यं राज्यं देवेषु वा पुनः।
यद्वाप्याधिकमेताभ्यां न तु सत्यं कथंचन॥

'मैं तीनों लोकों का राज्य, देवताओं का साम्राज्य अथवा इन दोनों से भी अधिक महत्त्व की वस्तु को भी एकदम त्याग सकता हूँ, परन्तु सत्य को किसी प्रकार नहीं छोड़ सकता।'

(महाभारत, आदिपर्व : १०३.१५)

पिता की खुशी की खातिर आजीवन ब्रह्मचर्य-पालन की प्रतिज्ञा करनेवाले, परम वीर, सत्यनिष्ठ भीष्म आठवें वसु थे। महर्षि वशिष्ठ के शाप के कारण आठों वसुओं को मनुष्य लोक में जन्म लेना था। श्री गंगाजी की कोख से जन्म लेने पर सात वसुओं को तो गंगाजी ने अपने जल में डालकर उनके लोक भेज दिया किन्तु आठवें वसु द्यौ को महाराज शान्तनु ने रख लिया। इसी बालक का नाम था देवव्रत।

एक बार वन में विचरण करते हुए महाराज शान्तनु की दृष्टि केवट दाशराज की पालित पुत्री सत्यवती पर पड़ी। सत्यवती को देखकर महाराज शान्तनु मुग्ध हो गए एवं उन्होंने दाशराज से सत्यवती का हाथ माँगा, किन्तु दाशराज चाहते थे कि उनकी पुत्री की सन्तान ही सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी मानी जाए। इसी शर्त पर वे सत्यवती का कन्यादान महाराज शान्तनु को दे सकते थे।

महाराज शान्तनु के लिए विषम परिस्थिति उत्पन्न हो गयी। एक ओर तो वे अपने ज्येष्ठ पुत्र देवव्रत का अधिकार उससे छीनना नहीं चाहते थे और दूसरी ओर सत्यवती को भुला भी नहीं पा रहे थे। अतः वे उदास रहने लगे। जब देवव्रत को पिता की उदासी का कारण मालूम हुआ तो वे तुरन्त दाशराज के पास पहुँच गए एवं बोले : ''मैं राज्यासन नहीं लूँगा।''

किन्तु दाशराज को इतने पर संतोष न हुआ। उन्होंने शंका व्यक्त की : ''तुम तो राजगद्दी पर नहीं बैठोगे किन्तु तुम्हारी सन्तान राज्य के लिए झगड़ सकती है।''

युद्ध में मर्माहत होकर भीष्म धराशायी हुए। उनका रोम-रोम बाणों से बिंध गया था। उन्हीं बाणों की शय्या पर वे सो गए। दक्षिणायन को देहत्याग के लिए उपयुक्त काल न समझकर वे अयन परिवर्तन के समय तक उसी शरशय्या पर पड़े रहे।

''बेटा! जब तुम चाहोगे तभी तुम्हारा शरीर छूटेगा। तुम्हारी इच्छा के बिना मृत्यु तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेगी।''

पंचभूत चाहे अपना गुण छोड़ दें, सूर्य तेजोहीन हो जाए, चन्द्रमा शीतल न रहे, इन्द्र में से बल और धर्मराज में से धर्म चला जाए, पर त्रिलोकी के राज्य के लिए भी मैं अपनी प्रतिज्ञा नहीं छोड़ सकता।

तब देवव्रत ने उसी समय दूसरी कठिन प्रतिज्ञा की : ''मैं आजीवन ब्रह्मचर्य- पालन करूँगा।'' देवताओं ने कुमार देवव्रत की इस भीष्म-प्रतिज्ञा से प्रसन्न होकर उन पर पुष्पवर्षा की और ऐसी भीषण प्रतिज्ञा करने के कारण उनको 'भीष्म' कहकर संबोधित किया।

महाराज शान्तनु ने अपने पुत्र की पितृभक्ति से खूब सन्तुष्ट होकर उसे आशीर्वाद दिया : ''बेटा! जब तुम चाहोगे तभी तुम्हारा शरीर छूटेगा। तुम्हारी इच्छा के बिना मृत्यु तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेगी।''

अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने के कारण बाद में अत्यावश्यक होने पर भी न तो भीष्म राजगद्दी पर बैठे और न ही विवाह किया। जब सत्यवती के दोनों पुत्र चित्रांगद एवं विचित्रवीर्य मर गए, तब भरतवंश की रक्षा एवं राज्य के पालन के निमित्त सत्यवती ने भीष्म को सिंहासन पर बैठने तथा सन्तानोत्पत्ति करने के लिए कहा। भीष्म ने माता से कहा :

''पंचभूत चाहे अपना गुण छोड़ दें, सूर्य चाहे तेजोहीन हो जाए, चन्द्रमा चाहे शीतल न रहे, इन्द्र में से बल और धर्मराज में से धर्म चाहे चला जाए, पर त्रिलोकी के राज्य के लिए भी मैं अपनी प्रतिज्ञा नहीं छोड़ सकता। माता! तुम इस विषय में मुझसे कुछ मत कहो।''

धन्य है उनकी सत्यनिष्ठा!

महाभारत के अठारह दिन के युद्ध में दस दिनों तक तो केवल भीष्म ने ही कौरव सेना का नेतृत्व किया। उन्होंने पूरी शक्ति से दुर्योधन के पक्ष में युद्ध किया। यहाँ तक कि उनकी वीरता के कारण भगवान श्रीकृष्ण को भी अपनी शस्त्र ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा को तोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा। किन्तु हृदय से धर्म पर स्थित पाण्डवों की विजय ही भीष्म पितामह को अभीष्ट थी। उनकी उपस्थिति में पाण्डवों के लिए कौरवसेना को परास्त करना कठिन था। आखिरकार पाण्डवों द्वारा पूछने पर उन्होंने स्वयं अपनी मृत्यु का उपाय बताया और युधिष्ठिर को अपने वध के लिए आज्ञा दी। धन्य है उनकी वीरता!

जिस समय युद्ध में मर्माहत होकर भीष्म धराशायी हुए उस समय उनका रोम-रोम बाणों से बिंध गया था। उन्हीं बाणों की शय्या पर वे सो गए। उस समय सूर्य दक्षिणायन में था। दक्षिणायन को देहत्याग के लिए उपयुक्त काल न समझकर वे अयन परिवर्तन के समय तक उसी शरशय्या पर पड़े रहे क्योंकि पिता के वरदान से मृत्यु उनके अधीन थी। अन्न-जल का परित्याग करके, बाणों की मर्मान्तक पीड़ा सहते-सहते उन्होंने वीरता के साथ-साथ धैर्य एवं सहनशक्ति की पराकाष्ठा दिखा दी। विश्व के किसी भी देश में ऐसा योद्धा न था, न है और न हो सकता है।

अन्न-जल का परित्याग करके, बाणों की मर्मान्तक पीड़ा सहते-सहते उन्होंने वीरता के साथ-साथ धैर्य एवं सहनशक्ति की पराकाष्ठा दिखा दी। विश्व के किसी भी देश में ऐसा योद्धा न था, न है और न हो सकता है।

महाभारत युद्ध की समाप्ति एवं युधिष्ठिर के राज्याभिषेक के पश्चात् एक बार युधिष्ठिर के श्रीकृष्ण के

पास जाने पर भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा था : ''युधिष्ठिर ! वेद एवं धर्म के सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता, नैष्ठिक ब्रह्मचारी पितामह भीष्म के न रहने पर जगत के ज्ञान का सूर्य अस्त हो जाएगा। अतः वहाँ चलकर तुमको उनसे उपदेश लेना चाहिए।''

युधिष्ठिर श्रीकृष्ण को लेकर भाइयों के साथ वहाँ गए जहाँ भीष्म शरशय्या पर पड़े थे। बड़े-बड़े जती-जोगी, तपस्वी-विद्वान, ऋषि-मुनि वहाँ पहले से ही उपस्थित थे। फिर भगवान श्रीकृष्ण की आज्ञा से पितामह भीष्म ने युधिष्ठिर को धर्म के समस्त अंगों का उपदेश दिया।

अन्त में सूर्य के उत्तरायण होने पर एक सौ पैंतीस वर्ष की अवस्था में माघ शुक्ल अष्टमी को सैकड़ों साधु-संतों के बीच शरशय्या पर पड़े हुए पितामह भीष्म ने अपने सम्मुख खड़े पीताम्बरधारी श्रीकृष्णचन्द्र का दर्शन करते हुए, उनकी स्तुति करते हुए चित्त को उस परम पुरुष में एकाग्र करके शरीर का त्याग कर दिया। यह दिन उनकी पावन स्मृति में 'भीष्माष्टमी' के रूप में मनाया जाता है।

भीष्म की कोटि के महापुरुष संसार में विरले ही होते हैं। यद्यपि भीष्म अपुत्र ही मरे, फिर भी सारे त्रैवार्णिक हिन्दू आज तक पितरों का तर्पण करते समय उन्हें जल चढ़ाते हैं।

यह गौरव विश्व के इतिहास में और किसी भी मनुष्य को प्राप्त नहीं है। इसीलिए सारा जगत आज भी उन्हें पितामह के नाम से पुकारता है एवं उनका नाम बड़ी श्रद्धा-भक्ति एवं आदर से लेता है।

*

'शिवमहिम्नस्तोत्र' का प्रागट्य

[महा शिवरात्रि २५ फरवरी पर विशेष]

एक राजा का फला-फूला बगीचा था, जिसमें वह शाम को सैर करने आता था। राजा आकर माली को रोज बोलता : ''सुबह यह फूल ले आना, यह गुलाब ले आना... महादेव की पूजा के लिए।''

जब सुबह माली फूल लेने आता तो पिछली शाम को बताये गये फूलों में से एक भी फूल नहीं दिखता। राजा माली को डाँटता तब माली जवाब देता : ''हजूर ! सुबह होते-होते वे फूल थे ही नहीं।''

''क्या फूल गिर गये थे ?''

''हजूर ! फूल गिरे हुए भी नहीं थे।''

''तो क्या चोर ले गये ?''

''अपने बगीचे में इतने रक्षक होते हैं तो चोर कैसे घुसेंगे ?''

''तो फूल कहाँ गये ?''

''पता नहीं, राजन् ! लेकिन चले गयें यह बात सच्ची है।''

राजा : '' गुप्तचर रखे जायें। मैं शाम को बगीचे में मोगरे, गुलाब आदि के इतने-इतने फूल देखता हूँ और सुबह होते-होते एक भी फूल नहीं दिखता ! क्या बात है ?''

गुप्तचर पर गुप्तचर रखे गये लेकिन फूलों का चोर पकड़ में नहीं आ रहा था। विद्वानों एवं ज्योतिषियों को बुलाया गया। उन्होंने अपनी ज्योतिष विद्या से कहा : ''राजन् ! आप ये जो फूल देखते हैं वे भी सच्चे हैं और सुबह होते-होते माली को नहीं मिलते यह बात भी सच है। आप मानें या न मानें लेकिन इसका कारण है कि गंधर्व लोक से कोई गंधर्व इस बगीचे में सैर करने आता होगा और आपको जो फूल अच्छे लगते हैं वे

उसे भी अच्छे लगते होंगे और वह ले जाता होगा।''

राजा : ''उसे पकड़ने का कोई उपाय है ?''

तब उन्होंने कहा : ''एक ही उपाय है, राजन् ! बिलिपत्र और पुष्पों से भगवान शिव की खूब पूजा करायें, लघुरुद्री करायें और शिवजी के निर्माल्य को (पूजा में चढ़े हुए पत्र-पुष्पादि को) बगीचे में बिखेर दीजिए। शिवजी की पूजा में चढ़ी हुई वस्तुएँ पूजनीय मानी जाती हैं और बगीचे में बिखेरने से गंधर्व के पैर उन पर पड़ेंगे जिससे शिवजी का अनादर करने का पाप उसे लगेगा। इससे उसके पुण्य क्षीण होने से उसका विमान उड़ नहीं सकेगा और सुबह होते-होते वह पकड़ा जायेगा।''

राजा ने ऐसा ही किया। पुष्पदंत नामक जो गंधर्व आता था उसने बगीचे में आकर फूल तोड़े और विमान में रखकर विमान के उड़ने का संकल्प किया तो विमान उड़ा ही नहीं। पुष्पदंत घबराया कि 'अब तो प्रभात होने को आया... क्या करें ?' इधर-उधर देखा तो प्रभातकालीन कुछ प्रकाश होने पर उसे दिखा कि बिलिपत्र, फूल आदि शिवजी की पूजा का निर्माल्य पड़ा है। वह समझ गया कि मेरे पुण्य नष्ट करने के लिए शिवजी का कोप मुझ पर पड़े ऐसी योजना की गई है। उस पुष्पदंत गंधर्व ने स्तुति करते हुए भगवान शिवजी की महिमा गाई :

महिम्नः पारन्ते परम विदुषो यद्यसदृशी।
स्तुतिर्ब्रह्मादिनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ॥

स्तुति करते-करते वह गंधर्व अंतर्यामी परमेश्वर की शरण में गया। उसकी स्तुति फलित हुई। प्रकृति ने सहायता की और उसका विमान उड़ गया। वह गौरवपूर्वक अन्तर्धान होने में सफल हुआ।

राजा ने सुबह आकर देखा कि आज भी फूल नहीं हैं !

तब विद्वानों-ज्योतिषियों ने पूरी छान-बीन करने के बाद कहा : ''फूल नहीं हैं तो कोई बात नहीं लेकिन फूल चुरानेवाले गंधर्व का विमान रुक गया था और उसने स्तुति करते-करते जिन पत्रों पर स्तुति लिखी है वे पत्र तो यहाँ पड़े हुए हैं।''

उन पत्रों को एकत्रित किया गया। पुष्पदंत गंधर्व द्वारा उन पत्रों पर लिखी हुई वह स्तुति 'शिवमहिम्न स्तोत्र' के नाम से प्रसिद्ध हुई जो आज भी शिवमंदिर में शिवोपासकों, पुजारियों और भक्तों द्वारा बड़ी श्रद्धा-भक्ति से गायी जाती है।

*

(पृष्ठ ६ का शेष)

विश्वास रखना चाहिए। वानरों ने विश्वास रखा। जो संपाति वहाँ लंका में जा नहीं सकता था किन्तु ज्ञानदृष्टि से वहाँ की बात जान सकता था उसके वचनों पर श्रद्धा रखकर उन्होंने अपना कार्य सम्पन्न कर लिया अर्थात् सीताजी की खोज कर ली।

संपाति गिद्ध ने अपनी अपार दृष्टि से अशोकवाटिका में बैठी हुई सीताजी को देखा। ऐसे ही कबीरजी, नानकजी, श्रीरामकृष्ण परमहंस, पू. लीलाशाहजी बापू जैसे महापुरुष तुम्हारे भीतर बसी हुई अशोकवाटिका में, जहाँ शोक नहीं है उस वाटिका में, जहाँ सीताजीरूपी ब्रह्मविद्या रहती है वहाँ चलने के लिए कहते हैं क्योंकि उनकी ज्ञानदृष्टि है। वे उन्हें देख सकते हैं, जानते हैं, तुम नहीं जानते हो। अगर तुम भी उनके वचनों पर श्रद्धा रखकर चलोगे तो ब्रह्मविद्यारूपी सीताजी को पाने में अवश्य सफल हो सकोगे।

*

(पृष्ठ २६ का शेष)

सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

मानसिक दुर्बलता में : ५-७ काजू सुबह शहद के साथ खायें। बच्चों को २-३ काजू खिलाने से उनकी मानसिक दुर्बलता दूर होती है।

कोढ़ में : कोढ़ में काजू के सिवाय कोई भी सफेद वस्तु खाने की छूट नहीं है। सफेद कोढ़ में काजू का उपयोग स्वतंत्रता से करना चाहिए।

वायु में : घी में भूने हुए काजू पर कालीमिर्च, नमक डालकर खाने से पेट की वायु नष्ट होती है।

काजू का तेल : यह तेल खूब पौष्टिक होता है। यह कृमि एवं कोढ़ में उपयोगी है। शरीर के काले मस्से, पैर की बिवाइयों एवं जख्म में उपयोगी है।

मात्रा : ४ से ५ ग्राम तेल लिया जा सकता है।

योगसिद्ध ब्रह्मलीन ब्रह्मनिष्ठ

प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद स्वामी श्री

लीलाशाहजी महाराज : एक दिव्य विभूति

(गतांक का शेष)

भगवान सदैव अपने प्यारे भक्तों को अपनी ओर मोड़ने के लिए विघ्न-बाधाएँ देकर संसार की असारता का भान करवा देते हैं। यही बात लीलाराम के साथ भी हुई। पाँच वर्ष की अबोध अवस्था में ही सिर पर से माता का साया चला गया तब चाचा एवं चाची समझबाई ने प्रेमपूर्वक उनके लालन-पालन की सारी जवाबदारी अपने ऊपर ले ली। पाँच वर्ष की उम्र में ही उनके पिता टोपणदास कुलगुरु को दिये गये वचन को पूर्ण करने के लिए उन्हें तलहार में कुलगुरु श्री रतन भगत के पास ले गये एवं प्रार्थना की :

''आपके आशीर्वाद से मिले हुए इस पुत्र को, आपको दिये गये वचन के अनुसार आपके पास लाया हूँ। अब कृपा करके दक्षिणा लेकर बालक मुझे लौटा दें।''

संत का स्वभाव तो दयालु ही होता है। संत रतन भगत भी टोपणदास का दिल नहीं दुखाना चाहते थे। उन्होंने कहा : ''बालक को आज खुशी से भले ले जाओ लेकिन वह तुम्हारे घर में हमेशा नहीं रहेगा। योग्य समय होने पर हमारे पास वापस आ ही जायेगा।''

इस प्रकार आशीर्वाद देकर संत ने बालक को पुनः उसके पिता को सौंप दिया। श्री टोपणदास कुलगुरु को प्रणाम करके खुश होते हुए बालक के साथ घर लौटे।

लीलाराम का बाल्यकाल सिंधु नदी के तट पर ही खिला था। वे मित्रों के साथ कई बार सिंधु नदी में नहाने जाते। नन्हीं उम्र से ही उन्होंने अपनी निडरता एवं दृढ़ मनोबल का परिचय देना शुरू कर दिया था। जब वे नदी में नहाने जाते तब अपने साथ पके हुए आम ले जाते एवं स्नान के बाद सभी मिलकर आम खाने के लिए बैठ जाते।

उस समय लीलाराम की अद्भुत प्रतिभा के दर्शन होते थे। बच्चे एक-दूसरे के साथ शर्त लगाते कि 'पानी में लंबे समय तक डुबकी कौन मार सकता है ?' साथ में आये हुए सभी बच्चे हारकर पानी से बाहर निकल आते किन्तु लीलाराम पानी में ही रहकर अपने मजबूत फेफड़ों एवं हिम्मत का प्रमाण देते।

लीलाराम जब काफी देर तक पानी से बाहर न आते तब उनके साथी घबरा जाते लेकिन लीलाराम तो एकाग्रता एवं मस्ती के साथ पानी में डुबकी लगाये हुए बैठे रहते।

लीलाराम जब पानी से बाहर आते तब उनके साथी पूछते :

''लीलाराम ! तुम्हें क्या हुआ ?''

लीलाराम सहजता से उत्तर देते हुए कहते :

''मुझे कुछ भी नहीं हुआ। तुम लोगों को घर जाना हो तो जाओ। मैं तो यहीं बैठा हूँ।''

लीलाराम पद्मासन लगाकर स्थिर हो जाते। बाल्यकाल से लीलाराम ने चंचल मन को वश में रखने की कला को हस्तगत कर लिया था। उनके लिए एकाग्रता का अभ्यास सरल था एवं इन्द्रिय-संयम स्वाभाविक। निर्भयता एवं स्वच्छंदता के दैवी गुण उनमें बचपन से ही दृष्टिगोचर होते थे।

जब लीलाराम दस वर्ष के हुए तब उनके पिता का देहावसान हो गया । अब तो चाचा-चाची ही माता-पिता की तरह उनका ख्याल रखने लगे । टोपणदास के देहत्याग के बाद गाँव के पंचों ने इस नन्हीं-सी उम्र में ही लीलाराम को सरपंच की पदवी देनी चाही किन्तु लीलाराम को भला इन नश्वर पदों का आकर्षण कहाँ से होता ? उन्हें तो पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण संतसमागम एवं प्रभुनाम स्मरण में ही ज्यादा रुचि थी ।

उस समय सिंध के सब गाँवों में पढ़ने के लिए पाठशालाओं की व्यवस्था न थी एवं लोगों में भी पढ़ने-बढ़ने की जिज्ञासा नहीं थी । अतः लीलाराम भी पाठशाला की शिक्षा के लाभ से वंचित् रह गये ।

जब वे १२ वर्ष के हुए तब उन्हें उनकी बुआ के पुत्र लखुमल की दुकान पर काम करने के लिए जाना पड़ा ताकि वे जगत के व्यवहार एवं दुनियादारी को समझ सकें । किन्तु इस नश्वर जगत के व्यवहार में लीलाराम का मन जरा भी नहीं लगता था । उन्हें तो संतसेवा एवं गरीबों की मदद में ही मजा आता था । **बहुजनहिताय...** की कुछ घटनाओं के चमत्कार ने नानकजी की तरह लीलाराम के जीवन में भी एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया ।

सिक्ख धर्म के आदि गुरु नानकदेव के जीवन में भी एक बार ऐसी ही चमत्कारिक घटना घटी थी ।

नानकजी जब छोटे थे तब उनके पिता ने उन्हें सुलतानपुर के नवाब दौलतखान की अनाज की दुकान पर अपने बहनोई के साथ काम करने के लिए कहा ।

संसारी लोग तो भजन के समय भी भजन नहीं कर पाते । भजन के समय भी उनका मन संसार में ही भटकता है । किन्तु नानकजी जैसे भगवान के प्यारे तो व्यवहार को भी भक्ति बना देते हैं ।

नानकजी दुकान में काम करते वक्त कई बार गरीब ग्राहकों को मुफ्त में वस्तुएँ दे देते । यह बात नवाब के कानों तक जाने लगी । गाँव के लोग जाकर नवाब के कान भरते : ''इस प्रकार दुकान कब तक चलेगी ? यह लड़का तो आपकी दुकान बरबाद कर देगा ।''

एक बार एक ऐसी घटना भी घटी जिससे नवाब को लोगों की बात की सच्चाई को जानना आवश्यक लगने लगा ।

उस दिन नानकजी दुकान पर अनाज तौल-तौलकर एक ग्राहक के थैले में डाल रहे थे । '१... २... ३... ४...' इस प्रकार संख्या की गिनती करते-करते जब संख्या १३ पर पहुँची तो फिर आगे १४ तक न बढ़ सकी क्योंकि नानकजी के मुख से 'तेरा' (तेरह) शब्द निकलते ही वे सब भूल गये कि 'मैं किसी दुकान पर अनाज तौलने का काम कर रहा हूँ ।' 'तेरा... तेरा...' करते-करते वे तो परमात्मा की ही याद में तल्लीन हो गये कि 'हे प्रभु ! मैं तेरा हूँ और यह सब भी तेरा ही है ।'

फिर तो 'तेरा-तेरा...' की धुन में नानकजी ने कई बार अनाज तौलकर ग्राहक को दे दिया ।

लोगों की नजर में तो नानकजी यंत्रवत् अनाज तौल रहे थे, किन्तु नानकजी उस समय अपने प्रभु की याद में खो गये थे । इस बात की शिकायत भी नवाब तक पहुँची । फिर नवाब ने दुकान पर सामान एवं पैसों की जाँच करवायी तो घाटे की जगह पर कुछ पैसे ज्यादा ही मिले ! यह चमत्कार देखकर नवाब ने भी नानकजी से माफी माँगी ।

जो भक्त अपनी चिंता को भूलकर भगवान के ध्यान में लग जाता है उसकी चिंता परमात्मा स्वयं करते हैं । श्रीमद् भगवद्‌गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी कहा है :

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

'जो अनन्य भाव से मेरे में स्थित हुए भक्तजन मुझ परमेश्वर को निरंतर चिंतन करते हुए निष्कामभाव से भजते हैं, उन नित्य एकीभाव से मेरे में स्थितिवाले पुरुषों का योगक्षेम मैं स्वयं वहन करता हूँ ।'

(गीता : ९.२२)

ऐसी ही चमत्कारिक घटना लीलाराम के जीवन में भी घटी :

लीलाराम का जन्म जिस गाँव में हुआ था, वह महराब चांडाई नामक गाँव बहुत छोटा था । उस जमाने

में दुकान में बेचने के लिए सामान टंगेबाग से लाना पड़ता था। भाई लखुमल वस्तुओं की सूची एवं पैसे देकर लीलाराम को खरीदी करने के लिए भेजते थे।

एक समय की बात है : उस वर्ष मारवाड़ एवं थर में बड़ा अकाल पड़ा था। लखुमल ने पैसे देकर लीलाराम को दुकान के लिए खरीदी करने को भेजा। लीलाराम खरीदी करके, माल-सामान की दो बैलगाड़ियाँ भरकर अपने गाँव लौट रहे थे। गाड़ी में आटा, दाल, चावल, गुड़, घी आदि था। रास्ते में एक जगह पर गरीब, पीड़ित, अनाथ एवं भूखे लोगों ने लीलाराम को घेर लिया। दुर्बल एवं भूख से व्याकुल लोग जब अनाज के लिए गिड़गिड़ाने लगे तब लीलाराम का हृदय पिघल उठा। वे सोचने लगे : 'इस माल को मैं भाई की दुकान पर ले जाऊँगा। वहाँसे खरीदकर भी मनुष्य ही खायेंगे न... ! ये सब भी तो मनुष्य ही हैं। बाकी बची पैसे के लेन-देन की बात... तो प्रभु के नाम पर भले ये लोग ही खा लें।'

लीलाराम ने बैलगाड़ियाँ खड़ी करवायीं और उन क्षुधापीड़ित लोगों से कहा :

''यह रहा सब सामान। तुम लोग इसमें से भोजन बनाकर खा लो।''

भूख से कुलबुलाते लोगों ने तो दोनों बैलगाड़ियों को तुरंत ही खाली कर दिया। लीलाराम भय से काँपते, थरथराते गाँव में पहुँचे। खाली बोरों को गोदाम में रख दिया। कुँजियाँ लखुमल को दे दीं। लखुमल ने पूछा :

''माल लाया ?''

''हाँ।''

''कहाँ है ?''

''गोदाम में।''

''अच्छा बेटा ! जा, तू थक गया होगा। सामान का हिसाब कल देख लेंगे।''

दूसरे दिन लीलाराम दुकान पर गये ही नहीं। उन्हें तो पता था कि गोदाम में क्या माल रखा है। वे घबराये, काँपने लगे। उनको काँपते हुए देखकर लखुमल ने कहा : ''अरे ! तुझे बुखार आ गया ? आज घर पर आराम ही कर।''

एक दिन... दो दिन... तीन दिन... लीलाराम बुखार के बहाने दिन बिता रहे हैं और भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं :

''हे भगवान ! अब तो तू ही जान। मैं कुछ नहीं जानता। हे करन-करावनहार स्वामी ! तू ही सब कराता है। तूने ही भूखे लोगों को खिलाने की प्रेरणा दी। अब सब तेरे ही हाथ में है, प्रभु ! तू मेरी लाज रखना। मैं कुछ नहीं, तू ही सब कुछ है...''

एक दिन शाम को लखुमल अचानक लीलाराम के पास आये और बोले :

''लीला... लीला... ! तू कितना अच्छा माल लेकर आया है !''

लीलाराम घबराये। काँप उठे कि 'अच्छा माल... अच्छा माल... कहकर अभी लखुमल मेरे कान पकड़कर मारेंगे।' वे हाथ जोड़कर बोले :

''मेरे से गलती हो गयी।''

''नहीं बेटा ! गलती नहीं हुई। मुझे लगता था कि व्यापारी तुझे कहीं ठग न लें। ज्यादा कीमत पर घटिया माल न पकड़ा दें। किन्तु सभी चीजें बढ़िया हैं। पैसे तो नहीं खूटे न ?''

''नहीं, पैसे तो पूरे हो गये और माल भी पूरा हो गया।''

''माल किस तरह पूरा हो गया ?''

लीलाराम जवाब देने में घबराने लगे तो लखुमल ने कहा :

''नहीं बेटा ! सब ठीक है। चल, तुझे बताऊँ।''

ऐसा कहकर लखुमल लीलाराम का हाथ पकड़कर गोदाम में ले गये। लीलाराम ने वहाँ जाकर देखा तो सभी खाली बोरे माल-सामान से भरे हुए मिले ! उनका हृदय भावविभोर हो उठा और गद्‌गद् होते हुए उन्होंने परमात्मा को धन्यवाद दिया :

'प्रभु ! तू कितना दयालु है... कृपालु है !'

लीलाराम ने तुरंत ही निश्चय किया : 'जिस परमात्मा ने मेरी लाज रखी है... गोदाम में बाहर से ताला होने पर भी भीतर के खाली बोरों को भर देने की जिसमें शक्ति है, अब मैं उसी परमात्मा को खोजूँगा... उसके अस्तित्व को जानूँगा... उसी प्यारे को अब अपने हृदय में प्रगट करूँगा।'

(क्रमशः)

परमात्मा से निकटता

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

जैसे-जैसे हमारी समझ बढ़ती जाती है वैसे-वैसे हम परमात्मा सद्गुरु के निकट आने लगते हैं। जैसे, एक डंडा मारने से गुल्ली थोडी ऊपर उठती है और तुरन्त दूसरा डंडा मारने से गुल्ली ऊपर उठकर गगनगामी होती है ऐसे ही ऊँचे विचार से, सत्संग के श्रवण-मनन से मनुष्य का मन थोड़ा ऊपर उठता है, फिर आत्मविचार करने से मन भीतर से ऊर्ध्वगामी होकर उस अलख की ओर गगनगामी बनता है।

आत्मचिन्तन द्वारा ज्यों-ज्यों बुद्धि सूक्ष्म होती जाती है त्यों-त्यों मनुष्य की समझ बढ़ती जाती है और बीते हुए कल की अपेक्षा आज और आज की अपेक्षा आनेवाले कल में उसे परमेश्वर अधिक अपने लगने लगते हैं। परन्तु समझशक्ति की कमी के कारण ही मानव संसार के करीब आ जाता है और संसार के नश्वर सम्बन्धों में अपने-आपको डुबा देता है जिससे अन्त में उसे रोना ही पड़ता है। यदि मनुष्य एक बार भी उस परमेश्वर का स्वाद चख ले तो फिर वह परमेश्वर के बिना नहीं रह पाएगा।

भक्ति की शुरूआत में हमें लगता है कि 'मैं भगवान का हूँ।' फिर ऊपर की ओर सीढ़ी चढ़ने पर, समझ बढ़ने पर महसूस करते हैं कि 'भगवान मेरे हैं।' इस स्थिति में हम भगवान के कुछ अंश में और निकट आए हुए दिखाई देते हैं। 'भगवान मेरे हैं' इस भाव से पता चलता है कि भक्त भगवान को अधिकारपूर्वक अपना मानता है।

फिर जब साधना और अधिक बढ़ती है, बुद्धि सूक्ष्म होती है, सत्संग बढ़ता है तब भक्त अपने इष्ट में इतना ओतप्रोत हो जाता है कि फिर उसका यह अनुभव हो जाता है : 'मैं और भगवान अलग नहीं, एक ही हैं।' वह **अहं ब्रह्मास्मि** के भाव में तल्लीन हो जाता है। शायद ऐसी ही अवस्था में कबीरजी ने कहा होगा :

कबीरा मन निर्मल भयो, जैसे गंगा नीर।
पीछे-पीछे हरि फिरे, कहत कबीर-कबीर ॥

यही बात हम क्यों नहीं कह पाते ? क्योंकि हमारे चित्त में कई जन्मों का संस्काररूपी मैल जम गया है इसलिए हम ईश्वर के करीब नहीं पहुँच पाते हैं और यह मैल है- अपेक्षा, आकांक्षा, इच्छा, वासना का।

अपेक्षाओं के त्याग से ही सुन्दर जीवन का निर्माण होता है। अपेक्षाओं के त्याग से ही सुन्दर बुद्धि का प्रागट्य होता है और अपेक्षाओं के त्याग से ही आन्तरिक सुंदरता प्रकट होती है। जितनी अपेक्षाएँ अधिक होती हैं, आदमी अन्दर से उतना ही अधिक परेशान होता है और जितनी अपेक्षाएँ कम होती हैं, आदमी का चित्त उतना ही शान्त होता है, निर्मल होता है। फिर तो वह भक्त निरपेक्ष मन से भगवान को कहता है :

तेरे फूलों से भी प्यार, तेरे काँटों से भी प्यार।
चाहे सुख दे या दुःख, हमें दोनों हैं स्वीकार ॥

निरपेक्ष भाव को प्राप्त हुआ भक्त निराग्रही बन जाता है। उसे न दुःख से डरने की आवश्यकता लगती है और न ही सुख के पीछे भागने की आवश्यकता होती है। इसलिए वह परम सुख को प्राप्त होता है।

यह तो हम भली प्रकार जानते हैं कि दुर्गुणों पर सद्गुण राज्य करते हैं, बुद्धुओं पर बुद्धिमान का राज्य

> *बुद्धुओं पर बुद्धिमान का राज्य चलता है। क्रोधी की अपेक्षा क्षमाशील आदरणीय होता है, कामी की अपेक्षा निष्काम पूज्य होता है। घमंडी की अपेक्षा नम्र प्रिय लगता है यानि दुर्गुणों पर सद्गुणों का साम्राज्य होता है।*

चलता है । क्रोधी की अपेक्षा क्षमाशील आदरणीय होता है, कामी की अपेक्षा निष्काम पूज्य होता है । घमंडी की अपेक्षा नम्र प्रिय लगता है यानि दुर्गुणों पर सद्गुणों का साम्राज्य होता है ।

दुर्गुण की अपेक्षा सत्त्वगुण ईश्वर के अधिक करीब होते हैं लेकिन उससे भी जो सुख मिलता है वह घड़ीभर का सुख है, सापेक्ष सुख है । निर्दय व्यक्ति की अपेक्षा दयावान का सम्मान होता है यह बात सही है, परन्तु दयावान व्यक्ति को भी सुख कब मिलेगा ? जब कोई दया का पात्र उसके सामने आए तब । दया करने से दयावान को सुख मिलता है । अपने से निर्बल आदमी जब भूल करता है तब उस पर दया करके उसे क्षमा करने में दयावान को सुख की प्राप्ति होती है लेकिन यह सुख भी है तो दूसरों पर निर्भर ही ।

आत्मचिन्तन द्वारा ज्यों-ज्यों बुद्धि सूक्ष्म होती जाती है त्यों-त्यों मनुष्य की समझ बढ़ती जाती है और बीते हुए कल की अपेक्षा आज और आज की अपेक्षा आनेवाले कल में उसे परमेश्वर अधिक अपने लगने लगते हैं ।

दुर्गुण की अपेक्षा सद्गुण ठीक हैं, अच्छे हैं, परन्तु भगवान का निरपेक्ष भक्त उससे भी आगे की बात करता है । दुर्गुण मन के विकार हैं और सद्गुण मन की सात्त्विक अवस्था है । तामसिक और राजसिक अवस्था से मन की सात्त्विक अवस्था परमेश्वरीय स्वरूप के अधिक नजदीक है लेकिन ये जो अवस्थाएँ हैं वे बदलती रहती हैं । जबकि भगवान का भक्त, **सर्वोऽहम्** का साक्षात्कार किया हुआ ज्ञानी भक्त इन तीनों गुणों से परे गुणातीत अवस्था में स्थित होता है । अवस्थाओं की बदलाहट को देखनेवाले अबदल आत्मा में उसकी स्थिति हो जाती है । वह मुक्तात्मा हो जाता है । फिर वह स्वयं तो तरता ही है, औरों का भी तारणहार हो जाता है ।

(पृष्ठ १७ का शेष)

से तरबतर हो उठा क्योंकि कंबल के नीचे उसने भयंकर दृश्य देखा था । उसने जिन लोगों का वध किया था, उनके मस्तक वहाँ पड़े थे ।

बाबा ने पुनः कहा : ''बोल, ढाँकने जैसा क्या है ? तेरे पाप या मेरा शरीर ?''

*

मुक्ति का साधन : समता

''गुरुदेव ! मुझे मुक्ति का साधन बताइए ।'' शिष्य ने प्रार्थना की ।

गुरुदेव ने कहा : ''यह तो अत्यंत सरल है । तुम जानते हो कि सब लोग आखिर में स्मशान में ही पहुँचते हैं चाहे वे अपने कुटुम्बी हों, स्नेहीजन हों या मित्रादि हों । तुम स्मशान में जाकर जो मुर्दे जलने के लिए वहाँ आयें उन्हें खूब गालियाँ देना, उनकी निन्दा करना । इतना करके आ । फिर तुम्हें साधन बताऊँगा ।''

शिष्य को उत्कंठा थी, अतः उसने गुरु के कथनानुसार किया । फिर वह गुरु के पास वापस आया तब गुरु ने उसे पुनः स्मशान में जाने के लिए आज्ञा देते हुए कहा : ''अब वहाँ जाकर सब मुर्दों की खूब प्रशंसा करो, सबको फूल चढ़ाओ ।''

शिष्य ने वैसा ही किया और गुरुजी को बताया । तब गुरु ने पूछा :

''तूने उनकी निंदा और स्तुति दोनों की है । अब यह बता कि उन्होंने क्या कहा है ?''

शिष्य : ''वे तो शांत रहे ।''

गुरुजी : ''तू भी ऐसा ही करना । तेरी जो स्तुति अथवा निंदा करें उन्हें तू हृदय से आशीर्वाद देना, प्रेम रखना, अपनी समता बनाये रखना । यह मुक्ति का पहला सोपान है । तू उस पर आरोहण कर ।''

सेवाधारियों एवं सदस्यों के लिए विशेष सूचना

(१) कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी तरह की नगद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें । इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी । अतः अपनी राशि मनीआर्डर या ड्राफ्ट द्वारा ही भेजने की कृपा करें । (२) 'ऋषि प्रसाद' के नये सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता की शुरुआत पत्रिका की उपलब्धता के अनुसार कार्यालय द्वारा निर्धारित की जाएगी ।

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

कर्त्तव्यपरायणता

बंगाल के बरद्वान जिले में श्री नीलममाधव बंदोपाध्याय नामक एक न्यायाधीश हो गये। वे सरकारी नौकरी से निवृत्त हुए एवं अपना अधिकांश समय प्रभु-स्मरण में बिताने लगे। जब वे बीमार पड़े एवं सदा के लिए आँखें बंद होने का समय हुआ उसके कुछ देर पूर्व उन्होंने अपने पुत्र को कागज-कलम लाने का संकेत किया। कागज-कलम आ जाने पर काफी कष्ट से तकिये का सहारा लेकर वे बैठे एवं लिखने लगे। उन्होंने लिखा :

'करीब १५ वर्ष पूर्व जब जमीन संबंधी मुकदमा चल रहा था तब उस मुकदमे के गरीब असील प्रफुल्लचंद्र मोहनराय सेन के पास से उसकी शिकायत सच्ची एवं परिणाम में सफलता दिलानेवाली होने के बावजूद उसके द्वारा लाचारीपूर्वक दिये गये रिश्वत के एक हजार रूपये लेकर मैं कर्त्तव्यपालन में भ्रष्ट हुआ था। मेरे जैसा न्यायाधीश भी यदि नीति एवं सच्चाई को किनारे रखकर, सरकार द्वारा मुझ पर किये गये विश्वास एवं ईमानदारी का पालन करने में असफल होता है तो दूसरों के लिए तो क्या कहा जाए? नौकरी के दौरान इसके अलावा मैं पूर्ण रूप से न्याय एवं कर्त्तव्यपरायण रहा हूँ। किन्तु यह गैरकानूनी एवं अनीतिपूर्वक लिए गये कदम ने मेरे हृदय को खोखला करके मुझे बहुत दुःखी कर दिया है। मुझे इसके लिए खूब पश्चात्ताप होता है। अतः मेरी पूरी संपत्ति का उत्तराधिकारी पुत्र उस संपत्ति में से उस गरीब असील की रकम में आज तक का ब्याज मिलाकर जो भी रकम हो उसे तुरंत पहुँचाये एवं उसके रहने की व्यवस्था के लिए वकील श्री बिपिनचन्द्र राय का संपर्क करे।'

जैसे ही पत्र पूरा हुआ, श्री नीलममाधव बंदोपाध्याय को थोड़ी शांति का अहसास होने लगा एवं उनके मुख पर स्मित झलकने लगा। पश्चात्ताप की अग्नि से शुद्ध बने हुए हृदय ने सदा के लिए विश्राम लिया।

जैसे ही यह पत्र पूरा हुआ, श्री नीलममाधव बंदोपाध्याय को थोड़ी शांति का अहसास होने लगा एवं उनके मुख पर स्मित झलकने लगा। पुत्र ने पिता द्वारा दी गयी आज्ञा का अक्षरशः पालन करने का वचन दिया और तभी पश्चात्ताप की अग्नि से शुद्ध बने हुए हृदय ने सदा के लिए विश्राम लिया।

['अखंड आनंद' जनवरी '७२ से संकलित]

*

ढाँकने जैसा क्या है ?

धर्मांध बादशाह औरंगजेब की सवारी जा रही थी। उस समय एक वृक्ष के नीचे एक नागा बाबा बेधड़क बैठा हुआ था। उसे देखकर बादशाह को गुस्सा आ गया। उसने खड़े होकर कहा :

''तेरे पास कंबल है, उससे शरीर को जरा ढाँक तो ले।''

बाबा ने हँसते-हँसते कहा : ''तुझे इतना खटकता है तो स्वयं नीचे उतरकर क्यों नहीं ढाँक देता ?''

औरंगजेब पसीने से तरबतर हो उठा। कंबल के नीचे उसने भयंकर दृश्य देखा था। उसने जिन लोगों का वध किया था, उनके मस्तक वहाँ पड़े थे।

औरंगजेब घोड़े पर से नीचे उतरा एवं कंबल उठाया। किन्तु यह क्या ? घबराकर उसने तुरंत कंबल पुनः रख दिया। वह पसीने

(शेष पृष्ठ १६ पर)

वास्तविक सौन्दर्य

- *पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू*

सौन्दर्य सबके जीवन की माँग है । वास्तविक सौन्दर्य उसे नहीं कहते जो आकर चला जाए । जो कभी क्षीण हो जाए, नष्ट हो जाए वह वास्तविक सौन्दर्य नहीं है । संसारी लोग जिसे सौन्दर्य बोलते हैं वह हाड़-मांस का सौन्दर्य तब तक अच्छा लगता है जब तक मन में विकार होता है अथवा तो तब तक अच्छा लगता है जब तक बाहरी रूप-रंग अच्छा होता है । फिर तो उससे भी मुँह मोड़ लेते हैं लोग । किसी व्यक्ति का, किसी वस्तु का सौन्दर्य हमेशा टिक नहीं सकता और परम सौन्दर्यस्वरूप परमात्मा का सौन्दर्य कभी मिट नहीं सकता ।

> *''तेरी मति तो नहीं मारी गई ? कहाँ तू विधवा दासी का पुत्र और कहाँ वह राजकुमारी ? राजा को पता चलेगा तो फाँसी पर लटका देंगे ।''*

एक सुन्दर एवं संयमी राजकुमारी थी । सद्ग्रंथों का पठन करनेवाली सदाचारी राजकुमारी की निजी सेवा में एक विधवा दासी रखी गई थी । वह राजकुमारी दासी के साथ अपनी दासी जैसा नहीं बल्कि एक वृद्धा माँ जैसा व्यवहार करती थी ।

> *''अच्छा ! तो तू मेरे सौन्दर्य की वजह से मुझसे शादी करना चाहता है ? यदि मैं तुझे ८०-९० प्रतिशत सौन्दर्य दे दूँ तो तुझे तृप्ति होगी ? दस प्रतिशत सौन्दर्य मेरे पास रह जाएगा तो तुझे चलेगा न ?''*

एक दिन किसी कारणवशात् उस दासी का २०-२२ साल का युवान पुत्र राजमहल में अपनी माँ के पास आया । वहाँ उसने राजकुमारी को भी देखा । राजकुमारी भी करीब १८-१९ साल की थी । सुन्दरता तो मानो उसमें कूट-कूटकर भरी थी । राजकुमारी का ऐसा सौन्दर्य देखकर दासीपुत्र अत्यंत मोहित हो गया । वह कामपीड़ित होकर वापस लौटा ।

जब दासी अपने घर गई तो देखा कि उसका पुत्र मुँह लटकाए बैठा था । दासी के बहुत पूछने पर लड़का बोला : ''मेरी शादी तुम उस राजकुमारी के साथ करवा दो ।''

दासी : ''तेरी मति तो नहीं मारी गई ? कहाँ तू विधवा दासी का पुत्र और कहाँ वह राजकुमारी ? राजा को पता चलेगा तो फाँसी पर लटका देंगे ।''

लड़का : ''वह सब मैं नहीं जानता । जब तक मेरी शादी राजकुमारी के साथ नहीं होगी तब तक मैं अन्न का दाना भी नहीं खाऊँगा ।''

उसने कसम खा ली । एक दिन... दो दिन... तीन दिन... ऐसा करते-करते पाँच दिन बीत गए । उसने न कुछ खाया न कुछ पिया ।

दासी समझाते-समझाते थक गई । बेचारी का एक ही सहारा था । पति तो जवानी में ही चल बसा था और एक-एक करके दो पुत्र भी मर गए थे । बस, यह एक ही लड़का था, वह भी ऐसी हठ लेकर बैठ गया ।

समझदार राजकुमारी ने भाँप लिया कि दासी उदास-उदास रहती है । जरूर उसे कोई परेशानी सता रही है । राजकुमारी ने दासी से पूछा :

''सच बताओ, क्या बात है ? आजकल तुम बड़ी खोई-खोई-सी रहती हो ?''

दासी : ''राजकुमारीजी ! यदि मैं आपको मेरी व्यथा बता दूँ तो आप मुझे और मेरे बेटे को राज्य से बाहर निकलवा देंगी ।''

ऐसा कहकर दासी फूट-फूटकर रोने लगी ।

राजकुमारी : ''मैं तुम्हें वचन देती हूँ । तुम्हें

और तुम्हारे बेटे को कोई सजा नहीं दूँगी। अब तो बताओ !''

दासी : ''आपको देखकर मेरा लड़का अनधिकारी माँग करता है कि शादी करूँगा तो इस सुन्दरी से ही करूँगा और जब तक शादी नहीं करूँगा तब तक भोजन नहीं करूँगा। आज पाँच दिन से उसने खाना-पीना छोड़ रखा है। मैं तो उसे समझा-समझाकर थक गई।''

राजकुमारी : ''चिंता मत करो। तुम कल उसको मेरे पास भेज देना। मैं उसकी वास्तविक शादी करवा दूँगी।''

लड़का खुश होकर पहुँच गया राजकुमारी से मिलने। राजकुमारी ने उससे कहा :

''मुझसे शादी करना चाहता है ?''

''जी हाँ।''

''आखिर किस वजह से ?''

''तुम्हारे मोहक सौन्दर्य को देखकर मैं घायल हो गया हूँ।''

''अच्छा ! तो तू मेरे सौन्दर्य की वजह से मुझसे शादी करना चाहता है ? यदि मैं तुझे ८०-९० प्रतिशत सौन्दर्य दे दूँ तो तुझे तृप्ति होगी ? दस प्रतिशत सौन्दर्य मेरे पास रह जाएगा तो तुझे चलेगा न ?''

''हाँ, चलेगा।''

''ठीक है... तो कल दोपहर को आ जाना।''

राजकुमारी ने रात को जमालगोटे का जुलाब ले लिया जिससे रात्रि को दो बजे जुलाब की हाजत तीव्र हो गई। पूरे पेट की सफाई करके सारा कचरा बाहर। राजकुमारी ने सुन्दर नक्काशीदार कुंडे में अपने पेट का वह कचरा डाल दिया। कुछ समय बाद उसे फिर से हाजत हुई तो इस बार जरीकाम और मलमल से सुसज्जित कुंडे में राजकुमारी ने कचरा उतार दिया। दोनों कुंडों को चारपाई के एक-एक पाये के पास रख दिया। उसके बाद फिर से एक बार जमालगोटे का जुलाब ले लिया। तीसरा दस्त तीसरे कुंडे में किया। बाकी का थोड़ा-बहुत जो बचा हुआ मल था, विष्टा थी उसे चौथी बार में चौथे कुंडे में निकाल दिया। इन दो कुंडों को भी चारपाई के दो पायों के पास में रख दिया।

एक ही रात में जमालगोटे के कारण राजकुमारी का चेहरा उतर गया, शरीर खोखला-सा हो गया। राजकुमारी की आँखें अन्दर उतर गईं, गाल की लाली उड़ गई, शरीर एकदम कमजोर पड़ गया।

एक ही रात में जमालगोटे के कारण राजकुमारी का चेहरा उतर गया, शरीर खोखला-सा हो गया। राजकुमारी की आँखें अन्दर उतर गईं, गाल की लाली उड़ गई, शरीर एकदम कमजोर पड़ गया।

दूसरे दिन दोपहर को वह लड़का खुश होता हुआ राजमहल में आया और अपनी माँ से पूछने लगा :

''कहाँ है राजकुमारीजी ?''

दासी : ''वह सोई है चारपाई पर।''

राजकुमारी के नजदीक जाने से उसका उतरा हुआ मुँह देखकर दासीपुत्र को आशंका हुई। ठीक से देखा तो चौंक पड़ा और बोला :

''अरे ! तुम्हें यह क्या हो गया ? तुम्हारा चेहरा इतना फीका क्यों पड़ गया है ? तुम्हारा सौन्दर्य कहाँ चला गया ?''

राजकुमारी ने बहुत ही धीमी आवाज में कहा : ''मैंने तुझे कहा था न कि मैं तुझे अपना ९० प्रतिशत सौन्दर्य दूँगी, अतः मैंने सौन्दर्य निकालकर रखा है।''

''कहाँ है ?'' आखिर तो दासीपुत्र था, बुद्धि मोटी थी।

''इस चारपाई के पास चार कुंडे हैं। पहले कुंडे में ५० प्रतिशत, दूसरे में २५ प्रतिशत, तीसरे कुंडे में १० प्रतिशत और चौथे में ५-६ प्रतिशत सौन्दर्य आ चुका है।''

> ***''मल-मूत्र से भरे इस शरीर का जो सौन्दर्य है, वह वास्तविक सौन्दर्य नहीं है लेकिन इस मल-मूत्र-विष्टादि को भी सौन्दर्य का रूप देनेवाला वह परमात्मा ही वास्तव में सबसे सुन्दर है भैया ! तू उस सौन्दर्यवान परमात्मा को पाने के लिए आगे बढ़। इस शरीर में क्या रखा है ?''***

लड़का एकदम जल्दी से उसे लेने के लिए पास में गया और उसके अन्दर देखते ही चकरा गया। दुर्गंध के मारे उसने नाक बन्द कर दी और बोला :

''यह सब क्या है ?''

''मेरा सौन्दर्य है। रात्रि के दो बजे से सँभालकर रखा है।''

दासीपुत्र हैरान हो गया। वह कुछ समझ नहीं पा रहा था।

राजकुमारी ने उसे फिर विवेक कराते हुए समझाया : ''जैसे सुशोभित कुंडे में विष्टा है ऐसे ही चमड़े से ढँके हुए इस शरीर में यही सब कचरा भरा हुआ है। जिस हाड़-मांस के शरीर में, मल-मूत्र से भरे शरीर में तुम्हें सौन्दर्य नजर आ रहा था, उसे एक. जमालगोटा ही नष्ट कर डालता है। मल-मूत्र से भरे इस शरीर का जो सौन्दर्य है, वह वास्तविक सौन्दर्य नहीं है लेकिन इस मल-मूत्र विष्टादि को भी सौन्दर्य का रूप देनेवाला वह परमात्मा ही वास्तव में सबसे सुन्दर है भैया ! तू उस सौन्दर्यवान परमात्मा को पाने के लिए आगे बढ़। इस शरीर में क्या रखा है ?''

खराब बातें फैलानी बहुत आसान है किन्तु अच्छी बातें, सत्संग की बातें बहुत परिश्रम और समय माँग लेती हैं। नगर में कोई हीरो या हीरोइन आती है तो हवा की लहर के साथ समाचार पूरे नगर में फैल जाते हैं लेकिन एक साधु, एक संत अपने नगर में आए हुए हैं ऐसे समाचार किसीको जल्दी नहीं मिलते।

दासीपुत्र की आँखें खुल गईं। राजकुमारी को गुरु मानकर और माँ को प्रणाम करके वह सच्चे सौन्दर्य की खोज में निकल पड़ा। आत्मा के अमृत को पीनेवाले संतों के द्वार पर रहा और परम सौन्दर्य को प्राप्त करके जीवन्मुक्त हो गया।

कुछ समय बाद वही भूतपूर्व दासीपुत्र घूमता-घामता अपने नगर की ओर आया और सरिता किनारे एक झोंपड़ी बनाकर रहने लगा।

खराब बातें फैलानी बहुत आसान है किन्तु अच्छी बातें, सत्संग की बातें बहुत परिश्रम और समय माँग लेती हैं। नगर में कोई हीरो या हीरोइन आती है तो हवा की लहर के साथ समाचार पूरे नगर में फैल जाते हैं लेकिन एक साधु, एक संत अपने नगर में आए हुए हैं ऐसे समाचार किसीको जल्दी नहीं मिलते।

उस दासीपुत्र में से बने हुए संत के बारे में भी शुरूआत में किसीको पता नहीं चला परन्तु फिर धीरे-धीरे करके उसकी बात फैलने लगी। बात फैलते-फैलते राजदरबार तक पहुँची कि 'नगर में कोई बड़े महात्मा पधारे हुए हैं। उनकी निगाहों में दिव्य आकर्षण है, उनके दर्शन से लोगों को शान्ति मिलती है।'

राजा ने यह बात राजकुमारी से कही। राजा तो अपने राज-काज में ही व्यस्त रहा लेकिन राजकुमारी आध्यात्मिक थी। दासी को साथ में लेकर वह गई महात्मा के दर्शन करने।

पुष्प-चंदन आदि लेकर राजकुमारी पहुँची। ४-५ साल बीत गये थे, वेष बदल गया था, समझ बदल चुकी थी, इस कारण लोग तो उन महात्मा को नहीं जान पाए किन्तु राजकुमारी भी नहीं पहचान पायी। जैसे ही राजकुमारी महात्मा को प्रणाम करने गई कि अचानक वे महात्मा राजकुमारी को पहचान गए। जल्दी से नीचे आकर स्वयं राजकुमारी के चरणों में दंडवत् प्रणाम करते हुए गिर पड़े।

राजकुमारी : ''अरे अरे... यह आप क्या कर रहे हैं महाराज !''

''देवी ! आप ही मेरी प्रथम गुरु हैं। मैं तो आपके हाड़-मांस के सौन्दर्य के पीछे पड़ा था लेकिन इस हाड़-मांस को भी सौन्दर्य प्रदान करनेवाले परम सौन्दर्यवान परमात्मा को पाने की प्रेरणा आप ही ने तो मुझे दी थी। इसलिए आप मेरी प्रथम गुरु हैं। जिन्होंने मुझे योगादि सिखाया वे गुरु बाद के। मैं आपका खूब-खूब आभारी हूँ।''

यह सुनकर दासी बोल उठी :

''मेरा बेटा !''

(शेष पृष्ठ २२ पर)

अडिगता

- *पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू*

जो व्यक्ति अचल होता है, अडिग होता है, वह हर प्रकार की परिस्थितियों से पार होकर अपने लक्ष्य तक पहुँच ही जाता है। ऐसे ही एक प्रख्यात व्यक्ति थे अब्राहम लिंकन, जिन्होंने मार्ग में आनेवाली समस्त आपदाओं को अडिगता से पार करके सफलता प्राप्त की थी।

एक बार अब्राहम लिंकन अपने मित्र के साथ किसी पहाड़ी पर सैर करने के लिए जा रहे थे। अमेरिका में तो मौसम का कोई भरोसा नहीं रहता है। थोड़ी ही देर में पहाड़ी पर अचानक तूफान शुरू हो गया। जोरों की आँधी चली एवं बारिश भी शुरू हो गयी। अब्राहम लिंकन का मित्र तो धरती पकड़कर बैठ गया लेकिन लिंकन ज्यों-के-त्यों खड़े रहे। खड़े-खड़े वे तूफान में झूमते हुए एक पौधे पर खिले हुए पुष्प को निहार रहे थे।

कुछ देर बाद तूफान एवं बारिश रुकने पर अब्राहम लिंकन का मित्र उनके पास आया और कहने लगा :

''मैं तो डर के मारे बैठ गया किन्तु तुम कैसे अडिगता से खड़े रह पाये ?''

लिंकन : ''तुम्हारी निगाहें बादल पर थीं, जो चल एवं बरस रहे थे जबकि मेरी निगाह एक मधुमक्खी पर थी, जो इतने तूफानों में भी झूमते हुए पौधे पर खिले हुए पुष्प पर अचल रहकर अपना कार्य कर रही थी। उसे आँधी-तूफान और पौधे के हिलने-डुलने का तो मानो पता ही नहीं था। जब एक नन्हीं-सी मधुमक्खी भी अपने कार्य में अडिग रहकर लगी रहती है तो हम क्यों न अडिग रहें ?''

> *''तुम्हारी निगाहें बादल पर थीं, जो चल एवं बरस रहे थे जबकि मेरी निगाह एक मधुमक्खी पर थी, जो इतने तूफानों में भी झूमते हुए पौधे पर खिले हुए पुष्प पर अचल रहकर अपना कार्य कर रही थी।''*

लिंकन की अडिगता का ही फल था कि वे एक अत्यंत सामान्य व्यक्ति में से अमेरिका के राष्ट्रपति बन पाये। अन्यथा तो... उनका बचपन बहुत गरीबी में बीता था। अपनी सच्चाई के कारण वे वकालत में भी सफल नहीं हुए और बेईमान की नाईं धंधा भी नहीं जमा पाये फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अंत में वे चुनाव की ओर झुके किन्तु सन् १८३४ का चुनाव हार गये। फिर भी उन्होंने धैर्य नहीं छोड़ा और पुनः चुनाव लड़े। फिर तो क्रमशः सन् १८३८, १८४३, १८४६, १८४८ एवं १८५८ में भी वे हारते ही गये। इसी बीच उनकी प्रेमिका भी चल बसी और उन्हें एक गंभीर रोग हो गया लेकिन उन्होंने चुनाव लड़ना नहीं छोड़ा। कितने अडिग रहे होंगे लिंकन ! आखिर में सन् १८६० में वे विजयी हुए और अमेरिका के राष्ट्रपति भी बने। कितना सामर्थ्य है अडिगता में !

> *''असफलताओं ने ही मेरे जीवन का निर्माण किया है, ज्यादा उत्साह से काम करने की प्रेरणा दी है। मेरी कमियों को दूर करने का सामर्थ्य दिया है। 'असफलता में ही सफलता छुपी है' यह मंत्र दिया है। 'सफलता के शिखरों को एक दिन जरूर सर कर लूँगा '- ऐसी श्रद्धा जगायी है।''*

कोई भी व्यक्ति जब अब्राहम लिंकन के पास अपने दुर्भाग्य को कोसना शुरू कर देता तब लिंकन उसे कहते :

''मित्र ! सामने की दीवार पर देखो। उस फ्रेम में मढ़े हुए कागज को पढ़कर देखो। उसमें मेरे जीवन में मिली असफलताओं की सूची है।

इतनी सारी असफलताओं के बावजूद भी मेरे जीवन में कभी हताशा नहीं आयी। इन असफलताओं ने ही मेरे जीवन का निर्माण किया है, ज्यादा उत्साह से काम करने की प्रेरणा दी है। मेरी कमियों को दूर करने का सामर्थ्य दिया है। 'असफलता में ही सफलता छुपी है' यह मंत्र दिया है। सफलता के शिखरों को एक दिन जरूर सर कर लूँगा - ऐसी श्रद्धा जगायी है।''

दीवार पर टँगे हुए फ्रेम के कागज में लिखी हुई असफलताओं की सूची इस प्रकार थी :

(१) व्यापार में असफलता मिली : १८३० में।
(२) विधानसभा के चुनाव में हार हुई : १८३२ में।
(३) व्यापार में असफलता मिली : १८३३ में।
(४) विधानसभा में निर्वाचित हुआ : १८३४ में।
(५) प्रेमिका का निधन हुआ : १८३५ में।
(६) सख्त बीमार पड़ा : १८३६ में।
(७) स्पीकर के चुनाव में हारा : १८३८ में।
(८) काँग्रेस के चुनाव में हारा : १८४३ में।
(९) काँग्रेस के चुनाव में हारा : १८४६ में।
(१०) काँग्रेस के चुनाव में हारा :१८४८ में।
(११) सिनेट के चुनाव में हारा : १८५८ में।
(१२) अमेरिका का राष्ट्रपति बना : १८६० में।

अब्राहम लिंकन के पास जो रोते-रोते जाता था, वह इस सूची को पढ़कर, श्रद्धा का दीप प्रगटाकर, उत्साहित होकर हँसते-हँसते विदा होता था।

अपनी अडिगता एवं दृढ़ पुरुषार्थ के बल पर ही लिंकन विजयी हो सके एवं अमेरिका के राष्ट्रपति बन सके। यदि लिंकन के पास अडिगता, धैर्य, उत्साह, साहस एवं दृढ़ पुरुषार्थ के साथ किन्हीं जीवन्मुक्त महापुरुष का सत्संग एवं सान्निध्य भी होता तो वे अवश्य मुक्ति के द्वार तक भी पहुँच सकते थे।

हे युवान भाई-बहनों! तुम भी अगर अपने जीवन में अडिगता एवं दृढ़ पुरुषार्थ का आश्रय लोगे, आत्मज्ञानी महापुरुषों का संग करके उनसे दिव्य जीवन जीने की कुँजियाँ सीख लोगे तो वह दिन दूर नहीं जब तुम हजारों विघ्न-बाधाओं को पार करके परमात्मप्राप्तिरूपी मंजिल हासिल कर लो।

कहाँ वे थे कहाँ तू था कभी तू सोच ये बंदे।
झुकाकर साँस को कह दे प्रभु वन्दे... प्रभु वन्दे... ॥

अपने श्वास को उस परमेश्वर के 'सोहं' स्वभाव में झुकाकर उसकी वंदना कर लो। तुम्हारा मंगल होगा, कल्याण होगा...

जीत उसीको मिलती है जो हार से जमकर लड़े।
हार के भय से जो किनारे खड़े, वे धराशायी पड़े ॥

(पृष्ठ २० का शेष)

तब राजकुमारी ने कहा :

''अब यह तुम्हारा बेटा नहीं, परमात्मा का बेटा हो गया है... परमात्मस्वरूप हो गया है।''

धन्य हैं वे लोग जो बाह्य रूप से सुन्दर दिखनेवाले इस शरीर की वास्तविक स्थिति और नश्वरता का ख्याल करके परम सुन्दर परमात्मा के मार्ग पर चल पड़ते हैं...

गौमाता : प्रदूषण मुक्ति प्रदायिनी

[गतांक का शेष]

(३) ईंधन : शुष्क गोबर का प्रयौग भारत के गाँवों में ईंधन के रूप में किया जाता है। एक अनुमान के अनुसार गोबर का २/३ भाग ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। गोबर में यदि शुष्क पदार्थ की मात्रा ५० प्रतिशत मान ली जाय तो गतांक की सारिणी नं. १ के अनुसार १५.७५ लाख टन शुष्क पदार्थ प्रतिदिन मिलता है जिसका २/३ भाग १०.५० लाख टन होता है जो ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता है जिससे लगभग ४३४ लाख टन कोयले क़ी बचत प्रति वर्ष होती है।

भारत की ९० करोड़ में से लगभग ६० करोड़ जनसंख्या ६ लाख गाँवों में रहती है। उसके ईंधन का मुख्य स्रोत गोबर से बने उपले तथा कृषि से प्राप्त घास-पात एवं लकड़ी है। जरा सोचकर देखें कि भारत की ६० करोड़ जनसंख्या गोबर का प्रयोग छोड़कर गैस, कोयला, मिट्टी का तेल तथा लकड़ी का प्रयोग करने लगे तो गैस और कोयले के भण्डार कितने दिन चलेंगे ? मिट्टी के तेल कि कितनी आवश्यकता होगी ? पेड़ कितने दिन चलेंगे ? आदि-आदि विचारणीय प्रश्न हैं। वर्त्तमान में चल रही रफ्तार से यदि कोयले तथा पैट्रोलियम पदार्थों का दोहन होता रहा तो ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि ये भण्डार २० से ३० वर्ष तक चलेंगे। उसके बाद क्या होगा, अनुमान लगाना कठिन है। आज छोटे कस्बों में तो क्या, बड़े शहरों में भी गैस की आपूर्ति संतोषप्रद नहीं है। गोबर की अनुपस्थिति में यह दशा कितनी भयावह हो सकती है ? भारत की खुशहाली तभी तक है जब तक गाँव की जनता गैस, कोयला तथा मिट्टी के तेल की माँग न करें और यह माँग जनता तब तक नहीं करेगी जब तक उसके पास गाय है। भले ही ये बातें भावनात्मक लगे परन्तु वास्तविकता से परे नहीं है। इस तरह हम देखते हैं कि मानव जाति के पोषण में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में गौमाता का कितना योगदान है ! ऐसे प्राणी की रक्षा करना हमारा परम धर्म तथा कर्त्तव्य है। अतः गोवंश की रक्षा हेतु हमारे प्राण भी संकट में आ जाएँ तो भी उसकी रक्षा करनी चाहिये।

भगवान वेदव्यास के अनुसार गायों से सात्त्विक वातावरण का निर्माण होता है। गायें अत्यंत पवित्र हैं इसलिए जहाँ रहती हैं वहाँ कोई भी दूषित तत्त्व नहीं रहता है। उनके शरीर से दिव्य सुगंधयुक्त वायु प्रवाहित होती है और सब प्रकार का कल्याण ही कल्याण होता है। पद्मपुराण में ब्रह्माजी नारदजी से कहते हैं कि गायों की प्रत्येक वस्तु पावन है और वह संसार के समस्त पदार्थों को पवित्र कर देती है।

आज पूरे विश्व में पर्यावरण के बढ़ते प्रदूषण से त्राहि-त्राहि मची हुई है। जीवन के लिए आवश्यक वायु, जल तथा खाद्य पदार्थ रोग उत्पन्न करने के मुख्य स्रोत हो गये हैं। विषाक्तता तथा प्रदूषण के कारण नये-नये रोग उत्पन्न हो रहे हैं। जब तक उनके लिए दवा की खोज होती है तब तक रोग नया रूप धारण कर लेता है। बढ़ते हुए प्रदूषण से ओजोन की परत क्षीण होती जा रही है, रोगों की संख्या बढ़ती जा रही है तथा गर्मी-वर्षा एवं जाड़े की ऋतुओं का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। मानव जाति अपने आधुनिकी-करण की होड़ में इतनी मदहोश हो चुकी है कि उसे जब होश आएगा तब तक सब कुछ स्वाहा हो चुका होगा। पेड़ों के अन्धाधुन्ध कटान के परिणाम-स्वरूप ऑक्सीजन यानि प्राण वायु की दिन-प्रतिदिन कमी

होती जा रही है तथा वातावरण में कार्बन-मोनोक्साइड, सल्फर डायोक्साइड तथा नाइट्रोजन डायोक्साइड जैसी विषैली गैसों की मात्रा बढ़ती जा रही है। जंगलों का सफाया करके अब वनीकरण की योजनायें बनाई जा रही हैं। पेड़ों की तरह हमारी देशी गायें भी विलुप्त होती जा रही हैं। पूरी तरह विलुप्त करके फिर उनके संरक्षण की योजनाएँ बनायेंगे।

गाय का प्रत्येक अवयव हमारे पर्यावरण को किस तरह प्रदूषण से बचा रहा है इसका विवेचन करने से पूर्व पर्यावरण प्रदूषण की विभीषिका पर एक नजर डालना आवश्यक है।

पर्यावरण प्रदूषण की कीमत : पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण की कीमत आँकना तो बहुत कठिन कार्य है परंतु विश्वबैंक के दो अधिकारियों कार्टर ब्रेडन तथा क्रिस्टन होम्मन के अनुसार 'निष्क्रियता का मूल्य : भारत में पर्यावरण नष्ट होने से हुई आर्थिक क्षति का मूल्यांकन' नामक अध्ययन के अनुसार भारत में वर्ष १९९२ में पर्यावरणिक गिरावट के कारण कुल रू. ३४००० करोड़ की हानि हुई। वायु और जल प्रदूषण से रू. २४५०० करोड़ की भूमि की खराबी और वनों की कटाई से रू. ९४५० करोड़ की हानि हुई है। उन्होंने यह भी बताया है कि भूमि की गुणवत्ता में ४ से ६.३ प्रतिशत प्रतिवर्ष की गिरावट आ रही है जिसकी कीमत रू. ४४०० करोड़ होती है। जल प्रदूषण से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है जिससे स्वास्थ्य संरक्षण आदि आदि पर रू. १९.९५० करोड़ का अतिरिक्त खर्च करना पड़ता है। पानी से उत्पन्न रोगों में मात्र विकलांगता पर ही रू. ३०५ करोड़ खर्च होते हैं फिर भी कितने ही बच्चों का इलाज नहीं हो पाता और उनका जीवन बरबाद हो जाता है। वायु प्रदूषण से ४०,००० मौतें प्रतिवर्ष होती हैं। वायुजनित रोगों की रोकथाम पर प्रतिवर्ष रू. ५५०० करोड़ खर्च होते हैं। मिट्टी की गुणवत्ता घटने से रू. ७६४० करोड़ की हानि उठानी पड़ रही है। ये आंकड़े तो सर्वेक्षण पर आधारित हैं। वास्तविकता इससे भी भयावह है। आज जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण तथा खाद्य पदार्थों के प्रदूषण के कारण अस्पताल भरे पड़े हैं, फिर भी आधे से अधिक मरीज बिना चिकित्सा सुविधा के ही दम तोड़ देते हैं। यह सही तथ्य है कि साठ के दशक में हमारे देश में भूखमरी थी और आवश्यकता थी कि किसी भी तरह से अन्न का उत्पादन बढ़ाया जाय। अन्न का उत्पादन बढ़ाने के लिए हरित क्रान्ति आई, नये-नये बीजों का विकास हुआ, रासायनिक खादों, कीटनाशक, कवकनाशक तथा खरपतवारनाशक दवाओं का प्रचलन बढ़ा, जिससे अन्न उत्पादन तो बढ़ा परंतु मानव-जीवन खतरे में पड़ गया। यद्यपि यह तकनिक की कमी नहीं है परंतु रासायनिक खादों तथा कीटनाशी दवाओं का जिस विवेकहीनता से प्रयोग बढ़ा उससे खाद्य पदार्थों की विषाक्तता बढ़ती गई। इस स्थिति से बचने के लिए यह सही समय है। अब हम ऐसे शोध करें जिनसे पैदावार तो बढ़े परंतु प्रदूषण पर अंकुश लगाया जा सके। साथ ही इन प्रदूषणों की विभीषिका से बचानेवाले पशुओं, जीव-जंतुओं तथा वनस्पतियों को संरक्षित किया जाय। इस संदर्भ में हमारी गाय का अभूतपूर्व योगदान है। पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण को रोकने में हमारी गाय अनवरतरूप से एक अक्षय स्रोत के रूप में अनादि काल से हमारी रक्षा कर रही है। उससे प्राप्त सारे उत्पादों (गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी तथा मट्ठा) का हमारे पर्यावरण में उपस्थित वायु, जल तथा खाद्य पदार्थों के शोधन तथा रोग-निवारण में कितना योगदान है यह सब हमारी कल्पना से परे है। गाय के द्वारा प्रदूषण से मुक्ति के विषय में जाने से पहले हम यह समझ लें कि गाय से तात्पर्य देशी नस्ल की गाय से है। जो उत्पाद देशी गाय से मिलते हैं वे सभी संकर तथा विदेशी गायों तथा भैंसों से भी मिलते हैं परंतु सबसे अधिक गुण देशी गाय में, देशी गाय में भी काली तथा काली में भी चरनेवाली और उसमें भी एक साल से कम उम्र की तथा बिना ब्याई गाय या बछिया में होते हैं।

(क्रमशः)

महत्त्वपूर्ण निवेदन : सदस्यों के डाक पते में परिवर्तन अगले अंक के बाद के अंक से कार्यान्वित होगा। जो सदस्य ६४ वें अंक से अपना पता बदलवाना चाहते हैं, वे कृपया फरवरी तक अपना नया पता भिजवा दें।

प्रसन्नता और हास्य : भक्ति और आरोग्यता की पूँजी

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिपर्यवतिष्ठते ॥

'अन्तःकरण की प्रसन्नता होने पर उसके सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है और उस प्रसन्न चित्तवाले कर्मयोगी की बुद्धि शीघ्र ही सब ओर से हटकर एक परमात्मा में ही भलीभाँति स्थिर हो जाती है।'

खुशी जैसी खुराक नहीं। चिंता जैसा गम नहीं। हरिनाम, रामनाम, ॐकार के उच्चारण से बहुत सारी बीमारियाँ मिटती हैं और रोग-प्रतिकारक शक्ति बढ़ती है। सभी रोगों पर औषधि की नाईं हास्य का उत्तम प्रभाव पड़ता है। हास्य के साथ भगवन्नाम का उच्चारण एवं भगवद्भाव होने से विकार क्षीण होते हैं, चित्त का प्रसाद बढ़ता है एवं आवश्यक योग्यताओं का विकास होता है। असली हास्य से तो बहुत सारे लाभ होते हैं।

नक़ली (बनावटी) हास्य से फेफड़ों का बढ़िया व्यायाम हो जाता है, श्वास लेने की क्षमता बढ़ जाती है, रक्त का संचार तेज होने लगता है और शरीर में लाभकारी परिवर्तन होने लगते हैं।

दिल का रोग, हृदय की धमनी का रोग, दिल का दौरा, आधासीसी, मानसिक तनाव, सिरदर्द खर्राटे, एसिडिटी, डिप्रेशन, ब्लडप्रेशर, सर्दी-जुकाम, कैंसर आदि जैसे अनेक रोगों में हास्य से बहुत लाभ होता है।

दिन की शुरूआत में २० मिनट तक हँसने से आप दिनभर तरोताजा एवं ऊर्जा से भरपूर रहते हैं। हास्य आपका आत्मविश्वास बढ़ाता है।

खूब हँसो भाई ! खूब हँसो , रोते हो इस विध क्यों प्यारे ?
होना है सो होना है, पाना है सो पाना है,
खोना है सो खोना है ॥ सब सूत्र प्रभु के हाथों में,
नाहक करनी का बोझ उठाना है ॥
फिकर फेंक कुएँ में जो होगा देखा जाएगा।
पवित्र पुरुषार्थ कर ले जो होगा देखा जाएगा ॥

अधिक हास्य किसे नहीं करना चाहिए ?

जो दिल के पुराने रोगी हों, जिनको फेफड़ों से संबंधित रोग हो, टी.बी. के मरीज हों, गर्भवती महिला या प्रसव में सिजिरियन ऑपरेशन करवाया हो, पेट का ऑपरेशन करवाया हो एवं दिल के दौरेवाले (हार्टअटैक के) रोगियों को जोर से हास्य नहीं करना चाहिए, ठहाके नहीं मारने चाहिए।

*

सूखा मेवा

(गतांक का शेष)

* खजूर *

पकी हुई खजूर मधुर, पौष्टिक, वीर्यवर्धक, पचने में भारी और शीतल है। वातयुक्त पित्त के विकारों में लाभदायक है। खारक के गुणधर्म खजूर जैसे ही हैं।

अरुचि में : अदरक, मिर्च एवं सैंधा नमक वगैरह डालकर बनायी गयी खजूर की चटनी खाने से भूख खुलकर लगती है। पाचन ठीक से होता है और भोजन के बाद होनेवाली गैस की तकलीफ भी दूर होती है।

कृशता में : गुठली निकाली हुई ४-५ खजूर को घी या दूध के साथ रोज लेने से कृशता दूर होती है, शरीर में शक्ति आती है और शरीर की गर्मी दूर होती है। बच्चों को खजूर न खिलाकर खजूर को पानी में पीसकर तरल करके दिन में २-३ बार देने से वे हृष्ट-पुष्ट होते हैं।

रक्ताल्पता (पांडु) में : घीयुक्त दूध के साथ रोज योग्य मात्रा में खजूर का उपयोग करने से खून की कमी दूर होती है।

नशे में : ज्यादा दारू पिये हुए व्यक्ति को पानी में भिगोयी हुई खजूर मसलकर पिलाना चाहिए।

खजूरपाक : शीत ऋतु में यह पकवान सभी को विशेष रूप से बनाना चाहिए। १ सेर देशी खजूर की गुठली निकालकर खजूर को दूध के साथ मिक्सर में एकरस कर लें। कढ़ाई में घी रखकर इस मावे को सेंक लें। मावा सेंक लेने के बाद इसमें इच्छानुसार गोंद एवं इलायची भी डाली जा सकती है। इस पाक को थाली में जमाकर ऊपर से बदाम-पिस्ता डाल दें। फिर टुकड़े करके भर लें।

खजूर को दूध में मिक्स न करना हो तो उसके बारीक टुकड़े करके सीधे ही घी में सेंक लें। सब टुकड़े बराबर मिक्स हो जायें तब जमा दें किन्तु इस पाक के टुकड़े करके नहीं भरे जा सकते।

आधुनिक मतानुसार १०० ग्राम खजूर में १०.६ मि.ग्रा. लौह तत्त्व, ६०० यूनिट कैरोटीन, ८०० यूनिट कैलोरी के अलावा विटामिन बी-1, फास्फोरस एवं चुना भी पाया जाता है।

मात्रा : ५ से १० खजूर ही खानी चाहिए।

सावधानी : खजूर पचने में भारी और अधिक खाने पर गर्म पड़ती है। अतः उसका उपयोग दूध-घी के साथ करना चाहिए।

* पित्त के रोगियों को घी में सेंककर खजूर खाना चाहिए।

* शरीर में अधिक गर्मी होने पर वैद्य की सलाह के अनुसार ही खजूर खायें।

* अंजीर *

अंजीर स्वाद में मधुर, शीतल, पचने में भारी, वात-पित्तशामक, रक्त की वृद्धि करनेवाला, शरीर को स्निग्ध करनेवाला एवं वायु की गति को नियमित करनेवाला है।

मात्रा : २ से ४ अंजीर खाये जा सकते हैं। भारी होने से इसे ज्यादा खाने पर सर्दी, कफ एवं मंदाग्नि हो सकती है।

नेत्र के लिए हितकारी : अंजीर में विटामिन 'ए' होता है जिससे वह आँख के कुदरती गीलेपन को बनाये रखता है।

रक्तशुद्धि और रक्तवृद्धि के लिए : ३-४ नग अंजीर को २०० ग्राम दूध में उबालकर रोज पीने से रक्त की वृद्धि एवं शुद्धि दोनों होती है। यह प्रयोग कब्जियत भी मिटाता है।

रक्तस्राव में : शरीर में से, कान, नाक, मुँह आदि से रक्तस्राव होता हो तो ५-६ घंटे तक २ अंजीर को भीगोकर उसे पीसकर, उसमें दूब का २०-२५ ग्राम रस मिलाकर, उसमें १० ग्राम मिश्री डालकर सुबह-शाम पीना चाहिए। इससे बवासीर में भी लाभ होता है।

अंजीर बच्चों की कब्जियत के लिए विशेष उपयोगी है।

* काजू *

काजू पचने में हल्का है जिसके कारण अन्य सूखे मेवों से अलग है। यह स्वाद में मधुर एवं गुण में गरम है अतः किसमिस के साथ मिलाकर खायें। कफ तथा वातशामक है। शरीर को पुष्ट करनेवाला, पेशाब साफ लानेवाला, हृदय के लिए हितकारी तथा मानसिक दुर्बलता को दूर करनेवाला है।

मात्रा : काजू गर्म होने से ७ से ज्यादा न खायें। गर्मी में एवं पित्त प्रकृतिवालों को उसका उपयोग

(शेष पृष्ठ ११ पर)

शक्तिशाली बम फटा : गुरुमंत्र से कई जानें बचीं

कार्तिक पूर्णिमा दिनांक : १४-११-९७ की यह घटना है :

मेरे मकान के ठीक पीछे एक साधक का मकान है, जिनका नाम श्री एस. पी. शर्मा है। घटना की सुबह जब शर्माजी माला कर रहे थे तो माला में व्यवधान पड़ रहा था। वे कहने लगे : ''पता नहीं क्यों, आज माला रुकी जा रही है !''

शाम को शर्माजी सब्जी लाने के लिए बाजार गये। उनकी हत्या करने की कोशिश में उनका अपना ही दामाद शक्तिशाली बम एवं ३१५ बोर के कट्टा के साथ शर्माजी के आने के इन्तजार में मेरे मकान के सामने अँधेरे में टहल रहा था। लाइट चली गयी थी।

रास्ते में ठोकर लगने के कारण वह गिर पड़ा तथा बम भी गिरकर फट गया। बम की आवाज से सारे मकान हिल गये। वह खुद घायल हो गया एवं खून से लथपथ होकर भागने लगा किन्तु तब तक लोगों ने दौड़कर उसे पकड़ लिया।

पुलिस के सामने उसने अपना नाम एवं शर्माजी का पता बताया। बाजार से शर्माजी लौटे तो पुलिस शर्माजी को लेकर अस्पताल गयी। वहाँ शर्माजी ने अपने दामाद को पहचान लिया।

बात यह थी कि ससुर और दामाद के बीच दो साल से खटपट चल रही थी। लड़की मायके में ही रह रही थी। दामाद शर्माजी को जान से मारने की नीयत से आया था किन्तु गुरुजी की असीम कृपा थी कि शर्माजी को मारने से पहले ही बम फट गया एवं वह दामाद पकड़ा गया। बम न फटा होता तो शर्माजी की जान के साथ मुहल्ले के कितने ही लोग मर जाते। धन्य है गुरुमंत्र की महिमा कि जिसने अपने साधक को तबाह होने से बचा लिया ! गुरुकृपा को देखकर आँखों में बरबस ही पानी आ जाता है...

- *शम्भूनाथ वर्मा*
मकान नं. ४६, आवास विकास कॉलोनी,
पो. कूड़ाघाट, जि. गोरखपुर (उ. प्र.).

*

आपके अभिप्राय आवकार्य हैं

'ऋषि प्रसाद' के समस्त सदस्यों एवं विशाल पाठक वृंद से निवेदन

आत्मीयश्री,

प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू के आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान की प्रवृत्तियों, विचारधारा, चिंतनशैली, सत्संग आयोजनों, शिविरों एवं आश्रम की प्रवृत्तियों को केन्द्र में रखकर विनम्र भाव से, सहज जिज्ञासु के रूप में गुजरात युनिवर्सिटी से पी. एच. डी. के लिए संशोधन का कार्य हाथ में लिया है। इस संशोधन के एक हिस्से के रूप में पूज्यश्री के प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संपर्क और सान्निध्य में आनेवाले सज्जनों के अभिप्राय एवं मन्तव्यों को जानने के लिए एक प्रश्नोत्तरी तैयार की है। आपके द्वारा इन प्रश्नों के प्राप्त उत्तरों का सर्वग्राही पृथक्करण इस शोध प्रबंध में किया जायेगा एवं ऐसे उच्च कोटि के ब्रह्मज्ञानी संतों से समाज को प्रत्यक्ष या परोक्ष कितना लाभ हुआ है उसका सार निकल सकेगा। परम पूज्य बापू के प्रति अहोभाव से प्रेरित होकर आप साधक के रूप में प्रवृत्त हैं। अतः इस दैवी कार्य में सहभागी होकर, थोड़ा समय निकालकर, प्रत्येक प्रश्न का निःसंकोच रूप से,

तटस्थता, निखालसता एवं स्पष्टता से संक्षेप में उत्तर भेजें-ऐसी हृदयपूर्वक प्रार्थना है...

शोध छात्र

गुजरात युनिवर्सिटी, अमदावाद।

पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू द्वारा निर्दिष्ट आध्यात्मिक दर्शन (फिलासाफी) एवं धार्मिक शिक्षा के संदर्भ में

अभिप्रायावली के प्रश्न

१. आपने कभी संत श्री आसारामजी महाराज का सत्संग सुना है ? उनका सर्वप्रथम परिचय आपको कब एवं कहाँ हुआ ? किस प्रकार हुआ ? उनके विषय में आपका क्या अभिप्राय है ?

२. जीवन में सत्संग की जरूरत कितने अंशों में है ? पूज्य बापू के सत्संग से आपको कितना लाभ हुआ ?

३. आश्रम में पू. बापू के सान्निध्य में आयोजित वेदांत शक्तिपात योग साधना शिविरों में आप कितनी बार सम्मिलित हुए हैं ? उससे आपको क्या लाभ हुआ है ?

४. आप आश्रम की कितनी प्रवृत्तियों से परिचित हैं ? इन प्रवृत्तियों से आपको तथा समाज को क्या लाभ हुआ ?

५. आश्रम की प्रवृत्तियों में और अधिक अच्छी प्रवृत्ति के विषय में आप कुछ सूचित कर सकते हैं ?

६. पू. बापू के आश्रम में आने से आपको क्या लाभ हुआ ? ऐसे आश्रमों की स्थापना समाज के लिए हितकर है ? क्यों ?

७. पूज्य बापू के आश्रम द्वारा भारतीय उत्सवों के मनाये जाने के संदर्भ में आपका क्या अभिप्राय है ?

८. आश्रम द्वारा होनेवाली प्रवृत्तियों से लोगों में किस प्रकार की जागृति आयी ?

९. दूरदर्शन और टी. वी. चैनलों द्वारा पू. बापू के सत्संग का प्रसारण होता है इस विषय में आप क्या मानते हैं ?

१०. आश्रम के युवाशक्ति जागृति अभियान के विषय में आपका क्या अभिप्राय है ?

११. आप बापू के शिष्य क्यों बने ? शिष्य बनने के बाद आपके जीवन में कोई परिवर्तन आया ? उसके लाभ के विषय में बतायें।

१२. आश्रम के प्रकाशन लोकभोग्य हैं ? उन्हें अधिक लोकभोग्य बनाने के लिए क्या करना चाहिए ?

१३. फ्रायड के भोगविज्ञान पर आधारित 'संभोग से समाधि' की विचारधारा एवं पातंजल योगदर्शन पर आधारित पू. बापू की 'यौवन सुरक्षा' की विचारधारा इन दोनों में से आपको कौन-सी उचित एवं जरूरी लगती है ? क्यों ?

१४. व्यसनमुक्ति के संदर्भ में पूज्य बापू युवकों को क्या सूचित करते हैं ?

१५. समाज के कायाकल्प के लिए आश्रम को अन्य कौन-सी प्रवृत्तियाँ अपनानी चाहिए ?

१६. जीवन में गुरुभक्ति का क्या महत्त्व है ? गुरुभक्ति के विषय में पू. बापू के कौन-से विचार आपके हृदय को छू गये ?

१७. अन्य विभूतियों की अपेक्षा पू. बापू आध्यात्मिक क्षेत्र में किस प्रकार अलग पड़ते हैं ? किन बातों में साम्यता नजर आती है ?

१८. राष्ट्रीय चेतना में पू. बापू का योगदान बताएँ।

१९. भारतीय संस्कृति के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए आश्रम अभी क्या कर रहा है ?

२०. आध्यात्मिक उत्थान में पूज्य बापू के सत्संग ने कौन-सी भूमिका अदा की है ?

२१. पू. बापू के सान्निध्य में आपके जीवन में घटित कोई भी चमत्कार पूर्ण घटना का उल्लेख करें।

२२. युवा पीढ़ी पर पड़ रहे कुसंस्कारों के विषय में पूज्यश्री का अभिप्राय क्या है ? वह कितने अंशों में उचित लगता है ?

२३. अपराधी मानसवाले कैदियों के हृदय-परिवर्तन के लिए आश्रम द्वारा होनेवाली प्रवृत्ति के विषय में आप क्या जानते हैं ? ऐसी प्रवृत्ति में आप कितने अंश तक संलग्न हो सकते हैं ?

२४. पूज्य बापू की किन लाक्षणिकताओं से आप सर्वाधिक प्रभावित हुए ?

२५. पूज्य बापू द्वारा निर्दिष्ट नीति-नियम साधक के जीवन में कितने अंशों में जरूरी हैं ?

२६. नारी-उत्थान के लिए पूज्य बापू द्वारा चलाये गये आंदोलन के विषय में आपका क्या मंतव्य है ?

२७. 'फैशनपरस्ती, पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण नारी के लिए नर्क का द्वार है' - पू. बापू की यह उक्ति कितनी वाजिब है ? किसलिए ?

२८. गुरुपूर्णिमा महोत्सव के समय आश्रम में कितनी बार उपस्थित रहे हैं ? उस दिन का अपना अनुभव बताइए।

२९. 'भारतीय शास्त्र व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए राजमार्ग हैं' - पू. बापू की यह उक्ति क्या बतलाती है ?

३०. समाज के उत्थान के लिए संतों का योगदान कैसे महत्त्वपूर्ण है ?

३१. आश्रम द्वारा आदिवासी क्षेत्रों में होनेवाले भण्डारे, प्राकृतिक आपदाओं के समय की जानेवाली सहाय आदि में मानवमात्र के कल्याण का हेतु सिद्ध होता है ? सबमें ईश्वर की अनुभूति का साकार प्रयोग देखने को मिलता है कि नहीं ?

३२. युवा चारित्र्य निर्माण के लिए पू. बापू की प्रवृत्तियों का संक्षेप में वर्णन करें।

३३. व्यक्तिगत साधना के लिए आश्रम किस प्रकार सहायक हो सकता है ?

३४. साधक के रूप में अपना विशिष्ट आध्यात्मिक अनुभव बताइए।

३५. स्कूल-कॉलेज की शिक्षा एवं सद्गुरु की ओर से मिलनेवाली आध्यात्मिक शिक्षा में तात्त्विक भेद क्या है ?

३६. आश्रम की किस प्रवृत्ति से आप सहमत नहीं हैं ? क्यों ?

३७. पूज्यश्री के दैवी कार्य को समाज के प्रत्येक स्तर तक पहुँचाने के लिए साधक के रूप में आप क्या कर सकते हैं ?

३८. प्रत्येक समाज के हर व्यक्ति को आश्रमाभिमुख करने के लिए क्या किया जा सकता है ? पू. बापू का चिंतन जीवन में किस तरह उपयोगी हो सकता है ?

३९. आपकी दृष्टि से 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका एवं 'लोक कल्याण सेतु' समाचार पत्र व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में क्या योगदान देते हैं ?

४०. पू. बापू द्वारा निर्दिष्ट योगासन एवं प्राणायाम से आपको क्या लाभ हुआ ?

४१. पू. बापू के सान्निध्य में शिविर भरने के बाद आपके द्वारा किये गये कीर्तन, मंत्रजाप, ध्यान से कैसी अनुभूति हुई ?

४२. 'परम पद की प्राप्ति ही जीवन का लक्ष्य है' - पूज्य बापू के इस दर्शन के विषय में आपका क्या मन्तव्य है ?

४३. 'सदैव सम और प्रसन्न रहना...' - पू. बापू की इस बात को आपने कितना आत्मसात् किया है ? उसके लाभ बताएँ।

४४. पू. बापू का पावन संदेश जीवन को बदलने में किस प्रकार उपयोगी हो सकता है ?

४५. श्री योग वेदांत सेवा समिति की कार्यपद्धति जानते हैं ? उसके विषय में प्रतिक्रिया बताइए।

४६. आपने मौनमंदिर की साधना की है ? आध्यात्मिक उत्थान के लिए यह साधना कितनी लाभदायी सिद्ध हुई है ?

४७. 'सद्गुरु : मोक्ष का द्वार' - इस विषय में आपका अभिप्राय बताइए।

४८. जीवन में 'दीक्षा' एवं 'गुरु' का क्या महत्त्व है ?

४९. लोकसंत से समाज को होनेवाले लाभ बताइए।

५०. शास्त्रनिर्दिष्ट नीति-नियमों का पालन कितने अंशों में जरूरी और संभव है ?

५१. पू. बापू की चिंतनशैली के महत्त्वपूर्ण अंग बताइए।

५२. पूज्य बापू के सत्संग के परिणामस्वरूप आपके कौन-कौन-से व्यसन छूट गये और आपके व्यवहार में कौन-कौन-से परिवर्तन हुए ?

५३. पूज्य बापू के सत्संग से आपके बच्चों के, कुटुम्ब के सदस्यों के विचार, व्यवहार, कार्यकुशलता, अभ्यास, व्यसनों में कोई परिवर्तन नजर आता है ? कौन-कौन से ?

५४. रोग एवं उसके उपचारों के लिए आश्रम द्वारा होनेवाली सेवा के लिए आप क्या महसूस करते हैं ?

५५. डिस्को, रोक, पोप वगैरह पाश्चात्य संगीत से जीवनशक्ति का ह्रास होता है जबकि हरिनाम संकीर्तन से जीवनशक्ति का विकास होता है - इस विषय में आपका क्या मत है ?

५६. 'बड़बादशाह' की परिक्रमा करके मनौती मानने से या पूज्य बापू के आशीर्वाद से आपको कोई लाभ हुआ हो तो बताइए।

५७. आश्रम के साधकों द्वारा होनेवाले निष्काम कर्म के लिए आप क्या अनुभव करते हैं ?

५८. गर्मी के दिनों में पूज्य बापू की प्रेरणा से रेलवे स्टेशन एवं आम स्थलों पर छाछ, ठण्डे पानी और शरबत की निःशुल्क सेवा से समाज को एवं सेवा करनेवाले को क्या लाभ होता है ? आपने उसमें भाग लिया है ?

५९. पूज्य बापू के आश्रमों द्वारा सामूहिक पितृश्राद्ध एवं सामूहिक विवाह पवित्र वातावरण में सादगी से एवं कम खर्च में किसी आडंबर के बिना होते हैं। आश्रम की इस प्रवृत्ति के विषय में आपका क्या मत है ?

६०. पूज्य बापू के आश्रम के आसपास आर्थिक रूप से पिछड़े हुए लोगों को राशनकार्ड के ऊपर बिना मूल्य के अनाज दिया जाता है। इस विषय के आपका क्या कहना है ?

६१. पू. बापू की प्रेरणा से आश्रमों की समितियाँ अस्पतालों में मरीजों को फल, धार्मिक पुस्तकें, ग्लुकोज वगैरह का वितरण करती हैं इस विषय में आपका क्या मत है ?

६२. आश्रम के साधक एवं महिला उत्थान आश्रम की साधिकाएँ समाज में सत्संग-प्रचार करती हैं, लोगों को संयमी जीवन के लिए प्रेरित करती हैं इस विषय में आपका क्या मंतव्य है ?

उपरोक्त प्रश्नावली के उत्तर लिखने से पूर्व अपने विषय में निम्नांकित जानकारियाँ देना अनिवार्य है :

आपका नाम - उपनाम - उम्र - जाति (स्त्री/पुरुष) - अभ्यास - व्यवसाय - गुरुदीक्षा ली है ? कब ? कहाँ ? - आश्रम की कोई सेवा प्रवृत्ति पहले सँभाली थी ? - अभी सँभाल रहे हैं ?

प्रत्युत्तर भेजने का पता : संशोधन अभियान विभाग, संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अमदावाद-३८०००५.

विशेष सूचना : (१) प्रश्नों के उत्तर देते समय पूरा प्रश्न नहीं लिखें परन्तु केवल उसका क्रमांक लिखकर फिर उसका उत्तर लिखें। (२) उत्तर संक्षेप में, अच्छे, सुवाच्य अक्षरों में एवं हिन्दी, गुजराती अथवा मराठी भाषा में ही लिखें। (३) आपके विषय में माँगी गई संपूर्ण जानकारी प्रारंभ में ही लिखें। उसके बाद ही उत्तर लिखें।

छिंदवाड़ा : धुलिया के सत्संग की पूर्णाहुति के पश्चात् पूज्य बापूजी छिंदवाड़ा पधारे। यहाँ पर दिनांक : २२ और २३ दिसम्बर '९८ को सत्संग हुआ। यहाँ पर तो लोगों को सिर्फ पता चलना चाहिए कि 'पूज्य बापूजी हमारे शहर में पधार रहे हैं...' बस, इतना ही काफी है। पहले ही दिन, पहले ही सत्संग-सत्र में विशाल सभा-मंडप श्रोताओं से पूरा भर गया और इसके अलावा भी बहुत से श्रोता बाहर भी बैठे थे। यहाँ पर राजनैतिक दृष्टि से विरोधी दलों के दोनों राजनेता श्री सुंदरलाल पटवा और श्री कमलनाथ पूज्य बापू के इस दैवी कार्य की सेवा में दोनों दिन खड़े पैर हाजिर रहे और दोनों नेताओं ने एक साथ बैठकर सत्संग का रसपान किया। यहाँ बारिस का विघ्न होते हुए भी सत्संग-कार्यक्रम में अभूतपूर्व सफलता मिली और लोगों ने इसका पूरा लाभ लिया।

यहाँसे पूज्यश्री चार्टर्ड प्लेन द्वारा जबलपुर में सत्संग के लिए पधारे।

जबलपुर : दिनांक : २४ और २५ को पूज्य बापू की पीयूषमयी वाणी का लाभ लाखों-लाखों जबलपुरवासियों को मिला। यहाँ पर हुए सत्संग की खबरें और पूज्य बापू के रंगीन चित्र मध्य प्रदेश के अग्रगण्य समाचार पत्रों के मुखपृष्ठ पर दिये गये। गत वर्ष जबलपुर के पास तेवर ग्राम में आये एक अति भयानक भूकंप में बेघर बने हुए उन गरीब कुटुंबों के लिए जबलपुर समिति एवं अमदावाद आश्रम के सहयोग से सैकड़ों पक्के मकान तैयार किये गये थे। ये मकान यहाँ पर पूज्य बापू के पावन करकमलों द्वारा वहाँ के निवासी गरीब, दरिद्रनारायणों को सौंपे गये। मकानों के साथ उनको मिठाई और दक्षिणा भी दी गई। कैसी खुशी रही होगी उन गरीबों में जब पूज्य बापू ने स्वयं पक्के घर उन्हें प्रदान किये और उनको दक्षिणा एवं मिठाइयाँ दीं ! इसकी तो हमलोग सिर्फ कल्पना ही कर सकते हैं। यहाँ के सत्संग की पूर्णाहुति करके पूज्य बापू अमरावती (अंबानगरी) पधारे।

अमरावती : दिनांक : २६ से २८ तक यहाँ पर सत्संग हुआ। यहाँ तो पहले ही दिन से बारिस का विघ्न था। फिर भी यहाँ के लोगों का कहना था कि इतनी बारिश में भी इतनी भारी संख्या में इन अलख पुरुष को सुनने के लिए श्रोताओं की भीड़ उमड़ पड़ी यह हमने पहली बार देखा है। बारिस में लोगों ने खड़े-खड़े सत्संग-अमृत का रसपान किया और यहाँ के हनुमान व्यायामशाला के मैदान में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में लोग एकत्रित हुए थे।

यहाँ के सत्संग का समापन करके पूज्य बापू ने नागपुर के लिए प्रस्थान किया।

नागपुर : दिनांक : २९ से ३१ दिसम्बर को नागपुर में पूज्य बापूजी ने अमृतरस बाँटा। यहाँ पर विशाल मंडप खड़ा किया गया था फिर भी पहले दिन से ही मंडप छोटा पड़ जाने के कारण हररोज मंडप बढ़ाना पड़ता था। इतनी विशाल संख्या में लोग सुनने को आयेंगे यह कल्पना यहाँ के आयोजनकर्त्ताओं ने भी नहीं की थी। हररोज मंडप बढ़ाने के बावजूद भी मंडप छोटा ही पड़ जाता था। यहाँ पर भी बारिस का विघ्न होते हुए भी सत्संग-कार्यक्रम की सफलता कल्पना से बाहर की हुई। पूज्य बापू ने ३१ तारीख को सुबह का सत्संग पूरा करके बालाघाट के लिए प्रस्थान किया।

बालाघाट : यहाँ पर भक्तों का आग्रह होते हुए भी समय के अभाव के कारण पूज्य बापू सिर्फ दो सत्र में सत्संग दे पाये। दिनांक : ३१ की शाम को और पहली जनवरी की सुबह यहाँ पर सत्संग हुआ। दोनों सत्संग-सत्र में लगता था कि पूरा बालाघाट नगर इस मैदान में सत्संग-श्रवण हेतु उतर आया है।

दिनांक : १ जनवरी '९८ को दोपहर १२ बजे बालाघाट सत्संग की पूर्णाहुति करके पूज्यश्री यहाँ से ४५ कि.मी. दूरी पर स्थित गोंदिया पहुँचे।

गोंदिया : गोंदिया के साधक-भक्त वर्षों से इंतजार कर रहे थे कि कब पू. सद्गुरुदेव के पावन करकमलों द्वारा गोंदिया में आश्रम की नींव रखी जायेगी ? पूज्यश्री के आगमन से उनकी यह आरजू पूरी हो गयी। पू. बापू के पावन करकमलों द्वारा गोंदिया आश्रम का भूमिपूजन हुआ एवं यहाँ के हजारों-हजारों भाविक भक्तों ने पूज्यश्री की पीयूषवाणी का रसपान किया। तत्पश्चात् पू. बापू १ जनवरी की शाम को विमान द्वारा हैदराबाद पधारे।

हैदराबाद : दिनांक : २ से ४ जनवरी '९८ तक तीन दिवसीय सत्संग आयोजन में संतप्रवर पूज्य बापू द्वारा बहायी गयी सत्संग-सरिता में अवगाहन करके हैदराबाद के भक्तों ने कृतकृत्यता का अनुभव किया। इस कार्यक्रम के दौरान्

भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री पी. वी. नरसिंहराव के सुपुत्र श्री आर. पी. नरसिंहराव ने भी काफी देर तक पूज्यश्री के अमृतवचनों के लिए इंतजार किया और फिर दो घण्टे तक सत्संग का लाभ लिया एवं पुष्पमाला द्वारा पूज्यश्री का स्वागत किया।

कल्याण : यहाँ दिनांक : २ से ४ जनवरी '९८ तक श्री सुरेश ब्रह्मचारीजी के सत्संग के उपरांत दिनांक : ५ एवं ६ को प्राणीमात्र के परम हितैषी पूज्य बापू ने ब्रह्मज्ञान की सत्संगवर्षा करके धर्मप्रेमी जनता को पावन किया। जिस महाराष्ट्र में कभी समर्थ रामदास एवं संत ज्ञानेश्वर जैसे संतों ने भक्तिरस की गंगा बहायी थी उसी महाराष्ट्र में, कहते हैं कि पहली बार इतने बड़े पैमाने पर हरिकथा का आयोजन हुआ है। यहाँ लाखों श्रद्धालुओं ने पू. बापू की अमृतवाणी का रसपान बड़े शांतिपूर्ण वातावरण में किया।

पश्चिम बांद्रा (मुंबई) : ब्रह्मविद्या के ज्योतिर्धर पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू ने बांद्रा में दिनांक : ७ से ११ जनवरी '९८ तक के पाँच दिवसीय भव्य विश्वशांति सत्संग समारोह का श्रीगणेश जब शंखनाद से किया तब मानो पूरा आसमान शंखध्वनि के आंदोलनों से गूँज उठा। यहाँ पर श्री योग वेदांत सेवा समिति, मुंबई की ओर से मराठी परंपरा के अनुसार आत्मज्ञानी संत पू. बापू का 'पोवाड़ा' गाकर एवं पुष्पहार पहनाकर स्वागत-पूजन किया गया। इन पाँच दिवस के दौरान् अनेक मान्यवरों, गायकों एवं अभिनेताओं ने पुष्पहार पहनाकर पूज्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। उनमें से अमेरिका के डॉ. पी. सी. पटेल, श्री कांतिभाई पटेल, श्री अशोक सिंहल, नगरसेवक श्री मोरे ; कमिश्नर श्री पाटिल, महाराष्ट्र के शिक्षा राज्यमंत्री श्री अनिल देशमुख, सांसद श्रीमती जयंती बहन, मंत्री श्री गजानन कीर्तिकर, शिक्षामंत्री श्री दत्ताजी राणे, महाराष्ट्र के पर्यटन एवं वस्त्रोद्योग मंत्री श्री अर्जुन खोतकर, श्री कुलवंत सिंह शरीफ, उद्योगमंत्री श्री गोपाल काब्रा, फिल्म अभिनेता अमरीशपुरी, अभिनेता एवं मंत्री सुनीलदत्त, अभिनेत्री हेमामालिनी तथा सुप्रसिद्ध गायक श्री अनूप जलोटा शामिल थे।

श्री अशोक सिंहलजी ने पूज्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए कहा :

''पू. बापू जैसे संतों की कृपा से ही आज तक देश चलता रहा है लेकिन संतों के पीछे चलनेवाला देश आज कहाँ भटक गया है ? देश का कल्याण तब तक नहीं हो सकता जब तक देशवासी और बड़े नेताओं की श्रद्धा संतों के प्रति जागृत नहीं होगी। मैं तो संतों की कृपा के लिए घूमता हूँ। मैं नेताओं को कहता हूँ कि संतों के पास जाओ और आशीर्वाद प्राप्त करो। देश को चलाना है तो संतों के साथ चलो। संतों के पीछे नहीं चलने से ही देश गुमराह हुआ है। संतों पर विश्वास करने से ही धर्म की स्थापना होगी...''

विदा की वेला में केवल पण्डाल में उपस्थित लाखों श्रद्धालुओं की आँखें ही अश्रुपूर्ण नहीं थीं वरन् घर में बैठकर टी. वी. पर सीधा प्रसारण देखनेवाले लाखों श्रद्धालुओं के नेत्र भी सजल हो उठे थे। बांद्रा मैदान खचाखच भरा हुआ था और बड़ी संख्या में बहुत-से लोग सड़कों पर खड़े रहकर सत्संग-श्रवण करते थे। धनभागी हैं वे लोग जो सत्संग के प्रति इतने सजग थे ! एक दिन किसी कारणवशात् दो-चार मिनट पूज्यश्री के सत्संग का सीधा प्रसारण न दिखा पाये तो नाराजगी के साथ १००० फोन प्रसारणकर्त्ताओं के कार्यालय में गूँज उठे !

समिति के सदस्य पण्डाल बढ़ाते गये। आखिरी दिन तो मैदान के आसपास के फूटपाथ और सड़कें भी सत्संगियों की चरणरज से पावन हो उठीं।

अमदावाद : दिनांक : १२ से १४ जनवरी '९८ तक अमदावाद आश्रम में तीन दिवसीय ध्यानयोग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें बाहर से आये हुए १८,७७६ शिविरार्थी शामिल थे एवं हररोज अपने-अपने घरों से आनेवाले सुबह होते ही आश्रम में आ जाते थे। जगह की कमी के कारण बड़ी संख्या में साधक-साधिकाएँ आश्रम की सड़कों पर भी बैठकर ध्यान तथा सत्संग का लाभ लेते थे। शिविरार्थियों का सैलाब ! उनके जलपान-भोजन की व्यवस्था करना और वह भी निःस्वार्थता से ! इस निःस्वार्थ सेवा को पू. बापू के लाडले सेवाधारी ही सँभाल पाये। आश्चर्य को भी आश्चर्य हो जाये कि इतने लोग एक साथ रहते, खाते-पीते, ध्यान करते, सड़कों पर सोते फिर भी किसीके भी चेहरे पर शिकन नहीं, दिल में फरियाद नहीं...

मोयद (गुज.) : १४ जनवरी को शिविर की पूर्णाहुति के पश्चात् दिनांक : १५ एवं १६ को मोयद में सत्संग कार्यक्रम हुआ। अमदावाद से ६० कि. मी. दूरी पर स्थित मोयद में अपनी-अपनी बसें लेकर शिविरार्थी वहाँ भी पहुँच गये। यहाँ दिनांक : १२ से १४ तक श्री सुरेश ब्रह्मचारीजी का सत्संग था। दिनांक : १५ एवं १६ को पूज्यश्री की पीयूषवर्षी वाणी का लाभ यहाँ की जनता को मिला।

मेहसाणा : गत वर्ष अतिवृष्टि में बेघर बने उन सैंकड़ों गरीबों के लिए संत श्री आसारामजी आश्रम की ओर से बनवाये गये कई पक्के मकान तैयार हो चुके थे। पूज्य बापू ने अपने भोजन और विश्राम में से समय निकालकर दिनांक : १७ जनवरी '९८ को ये मकान पूज्य बापू के पावन करकमलों द्वारा उन गरीब परिवारों को सौंपा गया। उस वक़्त का दृश्य

तो देखते ही बनता था। कितनी खुशी और आनंद उन गरीबों के चेहरे पर छा गई थी ! ऐसे ब्रह्मनिष्ठ संतश्री के दैवी कार्यों में से यह भी एक अद्‌भुत दैवी कार्य था ! पूज्य बापू हमारे जैसे गरीबों का भी कितना ख्याल रखते हैं ! उस दिन मेहसाणावासी कहाँ छुपके बैठनेवाले थे ! 'हमको भी पूज्य बापू के अमृतरस का थोड़ा-सा प्रसाद मिल जाय' इस हेतु पहले से वहाँ पर सत्संग की व्यवस्था की गई थी। नगरवासियों ने खुले आसमान के नीचे धरती पर बैठकर ब्रह्मज्ञानी पूज्य बापूजी से अमृतरस का पान किया।

वसाई-डाभला (गुज.) : यहाँ पर दिनांक : १४ और १६ जनवरी '९८ को श्री सुरेशानन्दजी के सत्संग के उपरांत दिनांक : १७ और १८ को वसाई में पूज्य बापू ने भक्तिरस के बादल बरसाये। पिछले सौ से भी अधिक सालों से वसाईवासियों ने ऐसा दृश्य कभी नहीं देखा था और इतना बड़ा जनसैलाब वसाई में पहले कभी नहीं उमड़ा था। यह वह गाँव है जिसने पूज्य बापू को अपने दैवी कार्य के लिए वर्षों पहले तीन रत्न देने का सौभाग्य पाया है। उन्होंने तीन सुपात्र पूज्य बापू को समर्पित किये थे। उनका यहाँ पर बहुमान समारोह रखा गया। **'सुमति कुमति सबके उर रहई'** यह शास्त्रवचन यहाँ साकार होते दिखाई पड़ा था। संतों के प्रति गाँववासियों की सेवा, सज्जनता, स्नेह और सहानुभूति प्रत्यक्ष दिखाई देती थी।

दिनांक : १८ जनवरी दोपहर को पूज्य बापू ने विसनगर आश्रम के वृद्धाश्रम की जगह पर शिलान्यास किया और वहाँ उपस्थित हजारों सत्संगप्रेमियों को सत्संगामृत का पान कराया।

उसी दिन शाम को अमदावाद से कलकत्ता जाने के लिए पूज्यश्री को हवाई जहाज पकड़ना था इसलिए वसाई में शाम की सभा में सत्संग-अमृत का थोड़ा-सा ही रसपान करा सके और शाम को सत्संगियों की भावपूर्ण हृदय और प्रेमाश्रु से भरे नेत्रों को झेलते हुए पूज्य बापू ने विदा ली। तेजी से गाड़ी भागी अमदावाद हवाई अड्डे की ओर। पूज्य बापू हवाई जहाज के समय से लेट पहुँच रहे थे। अधिकारियों को जब पता चला कि प्यारे संत आ रहे हैं तो लेट होते हुए भी जहाज को कुछ समय के लिए उन्होंने रोक लिया और हवाई जहाज पूज्य बापू को लेकर ही कलकत्ता पहुँचा।

कलकत्ता : दिनांक : १८ जनवरी '९८ की रात को कलकत्ता में नवनिर्मित आश्रम में बनाई गयी घासफूस की कुटिया में एकांत विश्रांति लेकर दिनांक : २१ से २५ जनवरी तक यहाँ मोहन बागान स्थल पर सत्संग हुआ। यहाँ पर सत्संग में आये हुए कम्युनिस्ट विचारोंवाले लोगों को भी पूज्य बापू अपने ही प्यारे बापू लगे। भक्तिभाववाले, ईश्वर को माननेवाले और कम्युनिस्ट भाइयों को बापूजी अपने दुलारे लगे। दिनांक : २६ जनवरी को गरिया आसारामजी आश्रम के आसपास के इलाके के आदिवासी दरिद्रनारायणों को अन्न, वस्त्र, मेवा-मिठाई, बर्तन और दक्षिणा देने के साथ सत्संग और स्नेह की सरिता में नहलाकर पूज्य बापू भुवनेश्वर, कटक, पुरी, थींगडा, ब्रह्मापुर, कालाहांडी की ओर रवाना हुए। जहाँ दरिद्रनारायणों की सेवा मिले वहाँ पर पूज्य बापू अपनी ओर से भी कार्यक्रम बनाते हैं।

पू. बापू के सत्संग कार्यक्रम

(१) हरदा (म. प्र.) में : ७ एवं ८ फरवरी। सुबह ९-३० से ११-३०. शाम ३ से ५. नेहरु स्टेडियम। फोन : २२३६४, २२१६०, २२६६०. **(२) भोपाल में शिविर** : ९ से १२ फरवरी। जाहिर सत्संग रोज शाम ३ से ५. संत श्री आसारामजी आश्रम, बाय पास रोड, गाँधीनगर, भोपाल। फोन : ५२१७७५, ५२३३००. **(३) कोटा में** : १३ से १५ फरवरी। सुबह ९-३० से १२. शाम ३ से ५. दशहरा मेला ग्राउन्ड। फोन : ३२३४१८, ४२१७६२. **(४) गुड़गावा में** : १८ फरवरी। सुबह ९-३० से १२. शाम ३-३० से ६. दशहरा ग्राउन्ड, न्यू कॉलोनी। फोन : ३००२३०, ३०२११५, ३२२५३७, ३२३६०८, ३२९१३०, ३२६५५१. **(५) फरीदाबाद (हरियाणा) में** : २१ से २३ फरवरी। सुबह ९-३० से ११-३०. शाम ३-३० से ५-३०. शिव मंदिर, सैनिक कॉलोनी, सेक्टर-४९। फोन : (०१२९) २८६५६४, २८८४९१, २८६४६५, २८१२४५, २१६४३८. **(६) उज्जैन में महा शिवरात्रि शिविर** : २५ से २७ फरवरी। जाहिर सत्संग रोज शाम ३-३० से ५-३०. संत श्री आसारामजी गुरुकुल आश्रम, मंगलनाथ रोड। फोन : ५५५५५२, ५५५०७७, ५५३५२९, ५५५८२६, ५६१२८९. **(७) सूरत आश्रम में होली शिविर** : १३ से १५ मार्च। संत श्री आसारामजी आश्रम, वरियाव रोड, जहाँगीरपुरा, सूरत। फोन : ६८५३४१, ६८७९३६. **(८) हरिद्वार कुंभ मेले में** : मार्च के आखिरी दिनों से १४ अप्रैल तक। चेटीचंड शिविर २८ से ३० मार्च। १६ से २० अप्रैल ध्यान योग शिविर-संभावित।

*

'संत शरण जो जन पड़े सो जन उधरनहार'

पूज्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए मुंबई के अल्पसंख्यांक मोर्चा के उपाध्यक्ष श्री यू.एम. खान, वि.हि.प.के नेता श्री अशोकजी सिंघल एवं मुंबई के शेरीफ सरदार सुरेंद्रसिंह।

विश्वशांति सत्संग में पूज्यश्री की ज्ञानगंगा में सराबोर मुंबई के भक्तजन।

REGISTRED WITH R.N.I. UNDER NO. 48873/91 LICENSED TO POST W/O PRE-PAYMENT : AHMEDABAD PSO LICENCE NO. 207 Regd. No. GAM/GA 132 BOMBAY, BYCULLA PSO LICENCE NO. 1 Regd. No. MH/MNW-01